जैन तीर्थवंदना

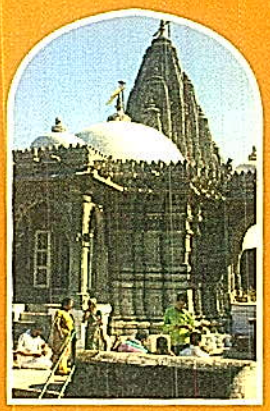

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 5 ISSUE : 8 MUMBAI, FEBRUARY 2015 PAGES : 36 PRICE :₹25

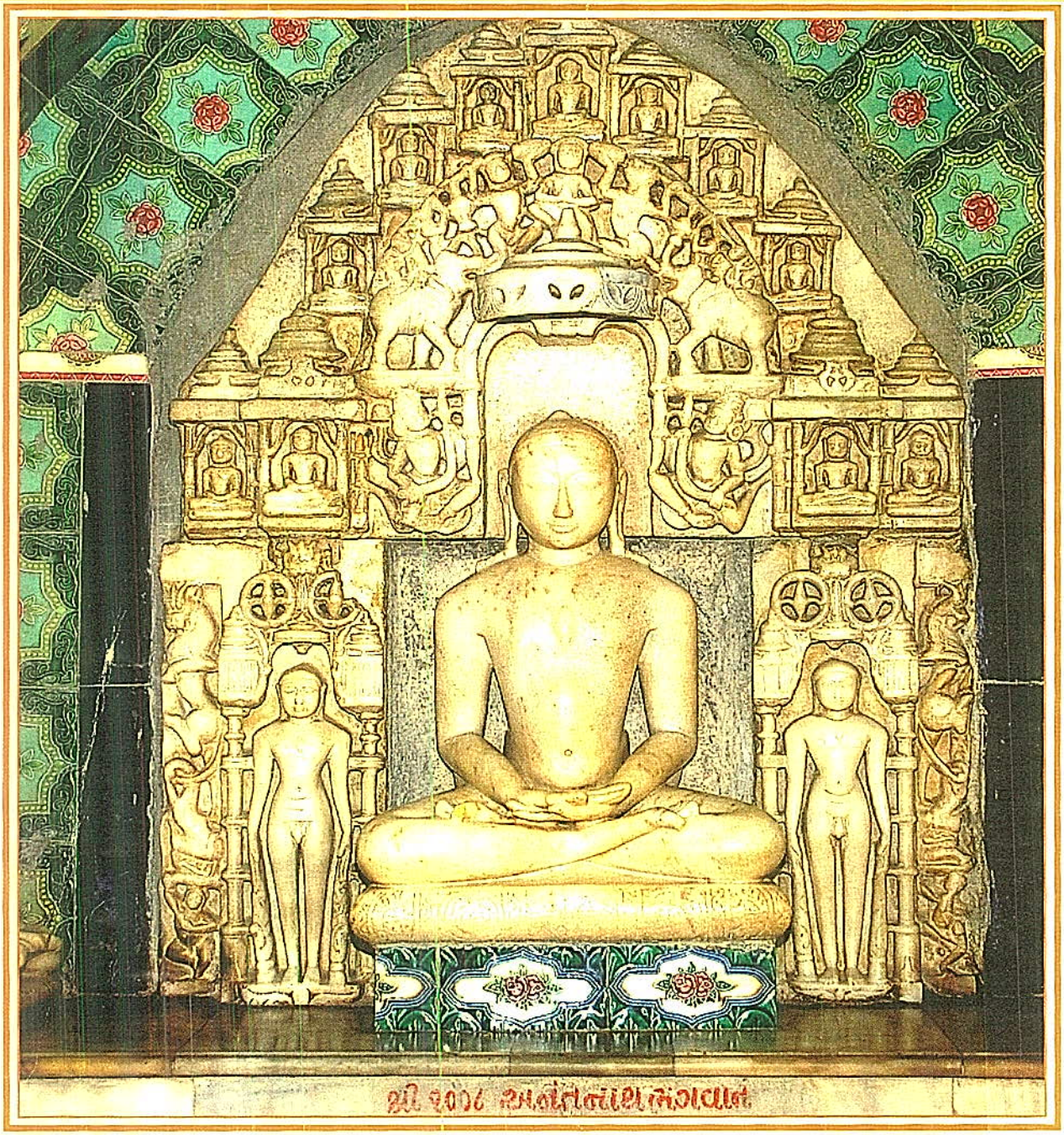

चौदहवें तीर्थंकर श्री 1008 अनन्तनाथ भगवान, ईडर-गुजरात क्षेत्र

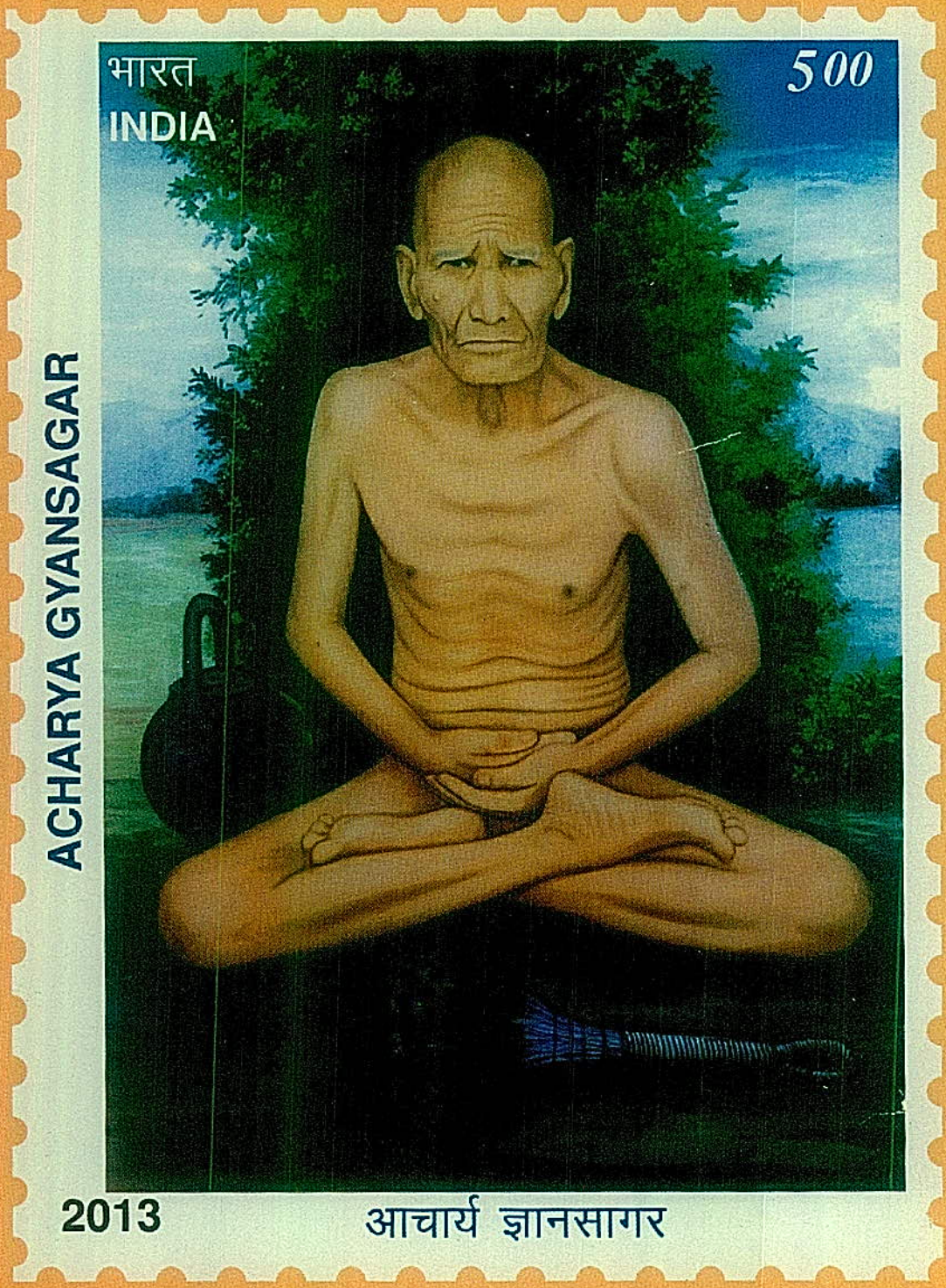

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 301100, 260101-10 Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साधर्मी बंधु / बांधवो

जय जिनेन्द्र।

तीर्थ हमारी आस्था के केन्द्र हैं।

तीर्थ हमारी श्रद्धा के सोपान हैं, जहां पहुंचकर हमारी चेतना नई ऊर्जा का प्रादुर्भाव महसूस करती है। तीर्थ हमारे जीवन की वो मंजिल है जहां पहुंचने के लिए हम वर्षों आराधना करते हैं। तीर्थ हमारी आत्मा का वो रूप है जहाँ की यात्रा-दर्शन-वंदन के लिए हम अपनी सुख-सुविधाओं के त्याग को तत्पर हो जाते हैं। तीर्थ हमारे लिए वो आत्मिक वाद्य यंत्र है जो तन-मन को झंकृत [illegible], हमें आध्यात्मिक वैभव के शिखर का दर्शन कराते हैं।

जैन दर्शन का सबसे महान तीर्थ है श्री सम्मेदशिखरजी। ये शाश्वत तीर्थराज है जो अनादि काल से है और जो अनंत काल तक रहेगा। जहां से अनंतानंत आत्माएं परमपद को प्राप्त कर चुकी है और करती रहेंगी। इसी क्रम में सिद्धक्षेत्र पावापुरीजी, गिरनारजी, चम्पापुरजी हमारी आस्था के प्राण हैं।

कलयुग की शिक्षा पद्धति एवं जीवन शैली का प्रभाव जैन समाज के क्रिया-कलापों पर गहराता जा रहा है। सामाजिक एवं धार्मिक जीवन जीने की कला भी प्रदूषित हो रही है। वोट की राजनीति एवं धनबल नैतिकता के मापदंडों को अर्थहीन बनाने में कसर नहीं छोड़ रहा है। तीर्थस्थलों को पर्यटन की नजरों से, स्वरूप प्रदान करने का क्रम सोचा जाने लगा है। राजनैतिक एवं सामाजिक सोच भी पर्यटन की विचारधारा को बल प्रदान करती [illegible]ख रही है। यह सोच जैन तीर्थों की आध्यात्मिक परंपरा का बहुत अहित करने वाली होगी। हमारे तीर्थ और हमारी तीर्थयात्राएं हमारे संचित पापों को हल्का करने, प्रक्षालन के निमित्त होते हैं न कि सांसारिक भोग विलास के उत्सर्जक। इसीलिए हमें हमारे तीर्थों को पर्यटन केन्द्र बनने से रोकना होगा। तीर्थों पर भोग-विलास की संस्कृति को पनपने के पूर्व ही निर्मूल करना होगा।

यह हम तभी कर सकेंगे जब हमारे संस्कार हमें ऐसा करने हेतु भीतर से उत्साहित करेंगे।

हम वर्तमान में एवं भविष्य में अपने तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा तभी कर पायेंगे जब हम आने वाली पीढ़ी के संस्कार सुरक्षित रखने में सक्षम होंगे। पूर्व में चलने वाली धार्मिक पाठशालाओं के माध्यम से जैन धर्म के संस्कार सुरक्षित रहे, लेकिन अब धार्मिक शिक्षण संस्थान समाप्त होते जा रहे हैं। इन्हें पूर्व जीवित करने की महती आवश्यकता है।

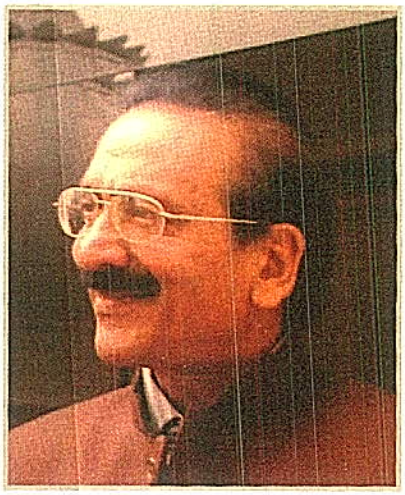

वर्तमान में जहाँ-जहाँ भी धार्मिक शिक्षण के साथ लौकिक शिक्षण संस्थान स्थापित हैं, समाज को प्रमुखता से इनके उन्नयन के लिए बल प्रदान करना होगा। दक्षिण भारत में, महाराष्ट्र में, बुंदेलखण्ड में, अन्य प्रांतों में हमारे आचार्यों, मुनिराजों एवं जैन दर्शन के विद्वानों ने इन्हें स्थापित किया था। हमें नई सोच के साथ इनके विकास में सहयोगी बनना होगा। वर्तमान में स्थापित प्रतिभास्थली संस्थान तिलवाराघाट (जबलपुर), रामटेक (नागपुर), डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़) लौकिक शिक्षण, धार्मिक शिक्षण के साथ-साथ संस्कारों के संरक्षण के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। सही मायने में जीवन जीने की कला सिखाने वाले संस्थान हैं।

यदि संस्कार सुरक्षित रहे तो धर्म सुरक्षित रहेगा एवं धर्म सुरक्षित रहेगा तो तीर्थ सुरक्षित रहेंगे।

तो आइये हम सब संस्कारों को सुरक्षित रखने का संकल्प लें जो हमारे तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा का संकल्प सिद्ध होगी।

श्रद्धेय - भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्दों में

बाधाएं आती हैं आयें,
घिरें प्रलय की घोर घटाएं
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं
निज हाथों में हंसते-हंसते,
आग लगाकर जलना होगा
तीर्थों की रक्षा करना होगा।

जय जिनेन्द्र।

आपका ही,

सुधीर जैन

तीर्थंकर से तीर्थ की प्रवृत्ति प्रवर्तमान होता है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 8 फरवरी 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थ संरक्षण के लिये हों उत्सव	5
जैनधर्म के चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान्	8
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन प्रवचनामृत	10
शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा	12
तीर्थंकर श्री शीतलनाथ की चतु:कल्याणक भूमि : विदिशा	22
जैन धर्म परिचय	26
शताब्दि समारोह - वार्षिक समारोह	29
मधुबन में मांस-मदिरा की बिक्री पर पाबंदी	30
हमारे नये बने सदस्य	33

तीर्थंकर श्री 1008
अनन्तनाथ भगवान,
अयोध्या क्षेत्र

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है ।

तीर्थ संरक्षण के लिये हों उत्सव

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

जैनधर्म के प्राण स्वरूप तीर्थक्षेत्र हैं जिनके अस्तित्व की रक्षा करना एवं उनकी प्रभावना करना हम सबका कर्त्तव्य है। चाहे वह साधु हों या विद्वान्, सामान्य जन हों या श्रेष्ठी; सभी का यह कर्त्तव्य है कि वे तीर्थ संरक्षण करें। भले ही हमारे तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण करने के लिए हमारे पास भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जैसी शताधिक वर्ष पुरानी संस्था हो किन्तु संस्था की शक्ति तो संत, विद्वान, श्रेष्ठी और समाज ही हैं, उनके बिना कोई भी संस्था अमूर्त्त ही रहेगी। वह मूर्त्त या जीवन्त नहीं हो सकती। यदि इन्हें जीवन्त बनाना है तो आर्थिक रूप से सक्षम बनाना पड़ेगा और धर्मकर्त्ताओं को भी इससे जोड़ना होगा क्योंकि–

दस्तक दे अब कह रहा, सुबहो–शाम समाज,
तीर्थों को जीवित रखो, पूरे होंगे काज।।

आज जैन समाज में उत्सवों की कमी नहीं है। अब उत्सव भी प्रायः; महोत्सव ही होते हैं। पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों, विधानों के आयोजनों, जन्म जयन्तियों की प्रदर्शन भव्यता देखते ही बनती है। कुछ हजार रुपयों में सम्पन्न हो जाने वाला उत्सव अब लाखों करोड़ों रुपयों की हद पार करने लगा है। बोलियों में असीमित राशि बोली जा रही है, कोई–कोई इसमें बुराई भी देखते हैं किन्तु हम इसमें बुराई देखने वालों में से नहीं किन्तु यह अवश्य चाहते हैं कि जो धन जिस दान भावना से जिस कार्य के लिए दिया जा रहा है उसका वैसा ही सदुपयोग हो। यदि प्रत्येक भव्य आयोजन के साथ एक तीर्थ के उद्धार को पूर्व ही कार्य योजना बनाकर सम्मिलित किया जाय तो कठिन कार्य भी सहज हो सकता है आखिर कठिन कार्य कब तक कठिन रहेगा। किसी ने ठीक ही कहा है–

चलो इस बार तो तारें, उतारें आसमानों से,
कोई भी काम मुश्किल से, अधिक मुश्किल नहीं होता।।

तीर्थ संरक्षण की जिम्मेदारी किसी एक की नहीं सभी की है। सभी इसे वहन करें तो इस कार्य में गति आयेगी। हमें यह आश्चर्य होता है कि हम अपनी ही विरासत को क्यों भूल रहे हैं? जिन तीर्थ क्षेत्रों पर जीर्णोद्धार या प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे– धर्मशाला, सड़क, पुजारी, प्रबंधक आदि की आवश्यकता है उन्हें समाज एवं भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए ताकि समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सिंघई सुधीर जैन की हार्दिक इच्छा है कि समस्त तीर्थक्षेत्रों का

एक नेटवर्क होना चाहिए जिसका केन्द्र दिल्ली या किसी एक निश्चित स्थान पर होना चाहिए ताकि हर घटना–दुर्घटना की जानकारी तत्काल मिल सके। मूर्ति चोरी आदि की अप्रिय घटना होने पर जानकारी मिलने पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त कर नाकाबन्दी करवायी जा सकती है। हमें परम्परागत साधनों के स्थान पर आधुनिक साधनों का उपयोग करना चाहिए। धर्मशाला में कमरा बुकिंग हेतु भी नेटवर्क का सहारा लिया जा सकता है। हर तीर्थक्षेत्र की एक वेबसाइट बनना चाहिए जिसमें उस क्षेत्र का पुरातन एवं आधुनिक इतिहास एवं जानकारी आ जाये। इससे देश–विदेश के लोग लाभान्वित होंगे। आज हमारे तीर्थक्षेत्र अपनी मूल भावना से पिछड़ गये हैं। कुछ ही तीर्थ जैसे शिखर जी, महावीर जी, तिजारा, हस्तिनापुर, कुण्डलपुर आदि ही साधन सम्पन्न बन सके हैं। आज के यात्रियों को तीर्थक्षेत्रों पर भी महानगरों जैसी सुविधाएं चाहिए। उनके लिए साधन महत्त्वपूर्ण हो गये हैं। साधनागत सम्पन्नता का प्रायः अभाव सभी तीर्थ क्षेत्रों पर है। कौन–सा ऐसा तीर्थ है जहाँ नियमित रूप से सामूहिक पूजन, प्रवचन योग, ध्यान आदि के आयोजन एक निश्चित समय पर होते हों और उनमें तीर्थयात्री जाते हों ? जैन तीर्थों पर हम शराबबंदी की मांग तो करते हैं किन्तु आलू, प्याज, जमीकन्द, शीतल पेय आदि अभक्ष्य पदार्थों से रहित क्षेत्र की मांग नहीं करते। शुद्ध शाकाहारी वस्तुयें मिलने और उनका ही उपयोग करने के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ नहीं हैं अतः हमारी अहिंसक भावना का पालन हमारे ही लोगों के द्वारा नहीं हो पाता। इसके लिए दोषी हमीं हैं, हमारी प्रबन्ध समितियाँ हैं और तीर्थयात्री तो हैं ही; जो तीर्थ के अनुरूप साधना, खानपान और व्यवहार तीर्थों पर भी नहीं करते। जो हमें करना चाहिए। हम ध्यान रखें कि प्रत्येक तीर्थ हमसे कह रहा है कि–

मैं तीर्थ हूँ
तीर्थंकरों से जुड़ाव है मेरा
अहिंसा, अपरिग्रह और शांति का
संवाहक हूँ मैं
ज्ञान आत्म शान्ति ध्यान

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

तप और त्याग
के लिए बना हूँ मैं
तुम्हें पवित्र करने वाला
पवित्र क्षेत्र हूँ मैं
आओ, स्वागत है तुम्हारा
हमारी पावन धरा पर
पर प्रण करो तुम
कि यहाँ आने से पहले
अपवित्र नहीं करोगे मुझे
पवित्रता ले जाओगे अपने साथ
पवित्र करोगे अपने तन–मन को
मेरी पवित्रता से
संरक्षण करोगे मेरा तन–मन–धन से
तुम्हारे ही तीर्थंकरों का तीर्थ हूँ मैं।।

पुराने समय में तीर्थयात्री तीर्थों की पवित्रता का विशेष ध्यान रखते थे। तीर्थक्षेत्रों पर विशेष ध्यान रखते थे। तीर्थक्षेत्रों पर विशेष रूप से तीर्थ–पर्वतों पर चप्पल–जूते पहनकर नहीं जाते थे। जब तक तीर्थवन्दना पूरी नहीं कर लेते थे कुछ खाते–पीते भी नहीं थे। आज स्थिति विपरीत है, हमारे तीर्थ–पर्वत कचरों से परेशान हैं। उनका पवित्र पर्यावरण प्रदूषित है; जिसे हम तीर्थयात्री ही रोक सकते हैं। हमें इसके लिए वातावरण बनाना होगा। तीर्थभूमियों को अपने उत्सव का अंग बनायें तो तीर्थ के संस्पर्श से हम सब पवित्र होंगे और हमारे तीर्थों को भी जन–बल–धन–बल मिल सकेगा। इस संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित है।

हमारा भारतवर्ष पुरातन देश है। इसकी संस्कृति पुरातन है। हमारी संस्कृति ने हमें दो धाराएं दीं 1. श्रमणधारा, 2. श्रावक धारा । सद्गृहस्थ श्रावकधारा में समाहित हैं। हमारी चेतना में जीवन जीने की कला और जीवन जीने का सूक्ष्मतम बोध समाया हुआ है। आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन, सादगी इसके आधार बिन्दु हैं। हम परम्पराओं के पोषक अवश्य हैं किन्तु नयी परम्पराएं गढ़ना और सड़ी–गली परम्पराएं तोड़ना भी हमारे स्वभाव में है इसलिए कोई हमें दकियानूस नहीं कह सकता। हम पाश्चात्य से प्रभावित अवश्य हुए क्योंकि हमारे शासकों ने हमारे सामने 'फॉरेन क्रेज' (विदेशी प्रभाव) सामने रखा मानो विदेश जाना स्वर्ग जाना हो किन्तु हमें आज भी अपना देश और अपना धर्म प्यारा है । हमें विदेशी संस्कृति और विदेशी भाषा के प्रति आदर के दीनता और हीनता बोध से निकलकर महानता और प्रधानता के गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। अपनी भाषा प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, मराठी, गुजराती आदि को अपनाना चाहिए।

हमने तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर महावीर स्वामी तक के अनुशासन को जाना और माना है। भरत जैसा प्रतापी चक्रवर्ती देखा जिसके नाम पर इस 'अजनाभ वर्ष' का नाम भारतवर्ष पड़ा। हमने बाहुबली जैसा महान् स्वावलम्बी, निर्भीक, पिताश्री एवं ज्येष्ठ भ्राता के प्रति आदर रखने वाला प्रतापी राजा देखा है, भामाशाह जैसा राष्ट्रभक्त दानी देखा है, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैसा निश्छल व्रती, संकल्प का धनी, शिक्षा प्रेमी संत देखा है,। आचार्य श्री शांतिसागर जी, आचार्य श्री आदिसागर जी, आचार्य श्री शांतिसागर (छाणी), आचार्य श्री वीरसागर जी, आचार्य श्री शिवसागर जी, महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री अजितसागर जी, आचार्य श्री सूर्यसागर जी जैसे तपस्वी संत देखे हैं और वर्तमान में भी हम श्रमण संस्कृति की धारा को वृद्धिंगत करने वाले संत शिरोमणि चारित्रवान् आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, प्राकृत भाषा के उत्थान के प्रति समर्पित आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, धर्मरक्षक आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज और मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज, मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज जैसे धर्मतीर्थ, ज्ञानतीर्थ प्रतिष्ठापक, जीर्णोद्धारक, श्रमण संस्कृति प्रतिष्ठापक संत देख रहे हैं।

जैन समाज का इतिहास दानवीरों से सदा गौरवान्वित रहा है। आज भी जैन समाज में दानवीरों की, भामाशाहों की कमी नहीं है। हमें इस बात का गर्व है कि हम कभी आक्रान्ता नहीं रहे, बर्बर नहीं हुए, हिंसक नहीं हुए। युद्ध के स्थान पर हमने सदा शान्ति का पक्ष लिया है। हमारा ज्ञान–विज्ञान कौशल, जैनदर्शन, अनेकान्तवाद, सर्वोदय का सिद्धान्त समेटे हुए सम्पूर्ण आगम हमारी अंतरात्मा को जगाने में समर्थ है जिससे हमें परमात्मपने का बोध होता है। हम कभी भी मिथ्यावर्ग से ग्रस्त नहीं हुए, शत्रु की ताकत देखकर पस्त नहीं हुए, न्याय का मार्ग कभी छोड़ा नहीं, राष्ट्र से विद्रोह कभी किया नहीं। हम आधुनिक सदा रहे किन्तु गुणात्मक विचारधारा को न हमने कभी छोड़ा, न उसे पुराना पड़ने दिया बल्कि उसके अनुसरणकर्त्ता (आबालवृद्ध महिला–पुरुष) सदा बने रहे। हमने सफलता को संस्कारों से जोड़े रखा और हर रास्ता बनाया जो अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह की अवधारणा को मजबूत करे।

हमारी संस्कृति पुरुषार्थ की रही, प्रयत्न और

प्रयास की रही इसलिए कभी किसी के सामने हमने हाथ नहीं फैलाये। हमने अपनी आवश्यकताएं सीमित रखीं और परमुखापेक्षिता को पास में फटकने नहीं दिया। हमें पता था कि जो जितना अधिक त्याग करेगा वह उतना ही अपना आत्मा/परमात्मा के निकट होगा। हमारा विश्वास मनुष्य बनाने का रहा है जो दया से युक्त हो, जिसका दान में विश्वास हो और जो दम (संयम) का पक्षधर हो। यदि किसी को 'आर्ट ऑफ लिविंग' सीखनी हो तो वह हम जैनों से सीख सकता है।

हमारे श्रमणों के उपकरणों में ही संसार का महान् दर्शन समाया हुआ है। मयूर पिच्छि हमें बताती है कि जीवदया के बिनाा एक कदम भी मत चलो। कमण्डलु कहता है पीओ अधिक खर्च कम करो(ऋण लेकर घी मत पीओ)। शास्त्र कहते हैं कि जो भी बोलो, शास्त्र सम्मत बोलो।

दान की दो बूंदें भी सागर भर सकती हैं। हमने चलना सीखा है, थकना नहीं। गीतकार शैलेन्द्र ने लिखा है कि–

चलते चलते थक गया, साँझ भी ढलने लगी।
तब राह खुद मुझे, बाँहों में लेकर चलने लगी।।

रोजन विलियम्स ने कहा कि–"अपनी सामर्थ्य का पूर्ण विकास न करना सबसे बड़ा अपराध है। जब आप पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते हैं तब आप दूसरों की सहायता करते हैं। मानव जीवन में करुणा महत्त्वपूर्णकारक है जिससे मनुष्य की उदात्तवृत्ति का पता चलता है। मन में उठने वाला दया का भाव आत्म परिचायक है और जब यह मन में उठे तो स्वपरहित होना ही है। इसी से व्यक्ति के समाजबोध का पता चलता है। बड़े आदमी का अनुग्रह यही है कि वह छोटों पर करुणाभाव रखे, उन्हें आश्रयप्रदान करे। जब हनुमान जी ने राम और लक्ष्मण को अपने कन्धों पर बिठा लिया और खड़े हुए तो श्रीराम गिरने लगे। श्रीराम ने कहा–"हनुमान हम गिर रहे हैं ?" तब हनुमान ने कहा–प्रभु, आप मेरा मस्तक पकड़ लीजिए। श्रीराम ने ऐसा ही किया और सँभल गये। तब हनुमान जी ने कहा–प्रभु, हम सामान्य जन तो किसी को पकड़ते हैं तो छोड़ने के लिए; किन्तु आप जिसे पकड़ते हैं उसे कभी छोड़ते नहीं अतः आज आपके पकड़ने से मैं कृतार्थ हो गया। इस प्रसंग पर मेरा कविमन कहता है कि–

धर्म के आचरण से आत्मा का शृंगार करना चाहिए।
क्षमा की औषधि से क्रोध का उपचार करना चाहिए।।
धरती अंबर तो सदा ठहरे हैं अपनी ही जगह,
देह को छोड़ आत्म से आत्म का उद्धार करना चाहिए।।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को आपके सहयोग की अपेक्षा–

जैन समाज के पास भारतवर्ष में सम्पूर्ण विश्व के लोगों को विशेष आकर्षित करने के लिए तीर्थक्षेत्रों की विशाल शृंखला है जहाँ पत्थर भी मानो मोम बनकर मूर्ति शिल्प के रूप में ढलकर परम शांतिमय वीतरागता को अभिव्यंजित कर कर रहे है। जैनों के शिल्पों का शृंगार भी काम के अंगार को शांत करने में समर्थ दिखायी देता है। खजुराहो के विश्वप्रसिद्ध जैन मंदिर इसके प्रमाण हैं। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरनाथ के जिनबिम्ब किसे शांति नहीं प्रदान करते ? उच्च पर्वत शृंगों पर विद्यमान तीर्थक्षेत्र, मंदिर, मूर्तियां, शिलालेख, मानस्तंभ आदि अपने आप में बेजोड़ हैं। जब जैनेतर इन्हें देखते हैं तो आश्चर्य करते हैं और एक प्रकार से हम से ईर्ष्या करते हैं कि अरे, आपके पास कितना वैभव है ? लेकिन जब हम देखते हैं कि यह असुरक्षित हैं तो लगता है कि गुनहगार हम ही हैं जिन्होंने इस विरासत को संभाला नहीं। हम सरकार से उम्मीद करें भी तो वह पूरी नहीं होगी। एक प्रकार का धार्मिक द्वेष जैनों के प्रति कतिपय लोगों में सदा से रहा है और आज भी उनके वारिस उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं। इसे वैचारिक आंदोलन के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। इस ओर हमारे संतों और विद्वानों को आगे आना चाहिए तथा वैचारिक प्रवाह से अपने धर्म की अच्छाईयों से परिचित कराना चाहिए। यह एक दिन का काम नहीं, एक व्यक्ति का काम नहीं बल्कि पूरा समाज इसमें जुड़े तभी सफलता मिलेगी। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि प्रत्येक जैन का पड़ोसी अपने आपको जैन भले ही न कहे किन्तु जैनों जैसा आचरण अवश्य करे।

भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शताधिक वर्षों से तीर्थक्षेत्रों की सेवा कर रही है। वर्तमान अध्यक्ष श्रीमान् सिंघई सुधीर जैन के नेतृत्व में सम्पूर्ण कमेटी प्राणपण से तीर्थ रक्षा हेतु संकल्पित है। समाज को चाहिए कि वह अपने विधान, पंचकल्याणक महोत्सवों में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग हेतु आमंत्रित करे और इस बात के लिए समाज को प्रेरित और शिक्षित करे कि उसकी पहचान तीर्थक्षेत्रों से है और उसका दायित्व है कि वह तीर्थ संरक्षण में सहभागी बने। क्या आप ऐसा करेंगे या आप कुछ ऐसा कर रहे हैं; इससे हमें अवगत अवश्य करायें।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

जैनधर्म के चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

दोष अनन्त नष्ट कर, जिनने गुण अनन्त को प्राप्त किया।
तीर्थंकर अनन्त बन कर इस जगती का उपकार किया।।
नमन करें हम आज उन्हें और निज अनन्त पद पायें।
सोलहकरण भावन भायें, औ जिन अनन्त बन जायें।।

धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व मेरु से उत्तर की ओर विद्यमान अरिष्ट नामक नगर में राजा पद्मरथ राज्य करता था। एक दिन उन्होंने स्वयं प्रभु जिनेन्द्र के पास जाकर धर्मोपदेश सुना और चिन्तन किया कि जीवों का शरीर के साथ और इन्द्रियों का अपने विषयों के साथ जो संयोग होता है वह अनित्य है; क्योंकि इस संसार में सभी जीवों के आत्मा और शरीर तथा इन्द्रियाँ और उनके विषय इनमें से एक का अभाव होता ही रहता है–

संयोगो देहिनां देहैरक्षाणां च स्वगोचरैः।
अनित्योऽन्यतराभावे सर्वेषामाजवंजवे।।

(आचार्य श्री गुणभद्र : उत्तरपुराण, 60/7)

इस तरह वैराग्य उत्पन्न होने पर राजा पद्मरथ ने अपने घनरथ नामक पुत्र को राज्य देकर संयम धारण कर लिया। ग्यारह अंग रूप सागर का पारगामी होकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। अंत में सल्लेखना धारण कर मरण को प्राप्त हो अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में बाईस सागर की आयुवाला इन्द्रपद प्राप्त किया। वहाँ शरीर की ऊँचाई साढ़े तीन हाथ, लेश्या शुक्ल थी। वह ग्यारह माह में एक बार श्वास लेता था, बाईस हजार वर्ष बाद आहार ग्रहण करता था, मानसिक प्रवीचार से सुखी रहता था, तभः प्रभा नामक छठवीं पृथिवी तक उसका अवधिज्ञान था और वहीं तक उसका बल, विक्रिया और तेज था। उस जीव ने सुखोपभोगपूर्वक अच्युत स्वर्ग में अपनी आयु व्यतीत की। यही जीव अगले भव में जैनधर्म के 14वें तीर्थंकर के रूप में अवतरित हुआ। वृत्तान्त इस प्रकार है–

जम्बूद्वीप के दक्षिण भरतक्षेत्र की अयोध्या नगरी में इक्ष्वाकुवंशी काश्यप गोत्री महाराजा सिंहसेन अपनी महारानी जयश्यामा (सर्वयशा) के साथ सुखोपभोग करते थे। कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा के दिन प्रातः काल रेवती नक्षत्र के रहते रानी जयश्यामा (सर्वयशा) ने सोलह स्वप्न देखे और मुख में हाथी को प्रवेश करते हुए देखा; जिसका प्रतिफल राजा सिंहसेन ने इस प्रकार बताया कि तुम्हारे गर्भ में अच्युतेन्द्र आकर जन्म ले तीर्थंकर बनेंगे। तदनन्तर देवों ने अयोध्या आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मनाकर राजा सिंहसेन और रानी जयश्यामा (सर्वयशा) की वस्त्र, माला और आभूषण आदि से अलंकृतकर पूजा की।

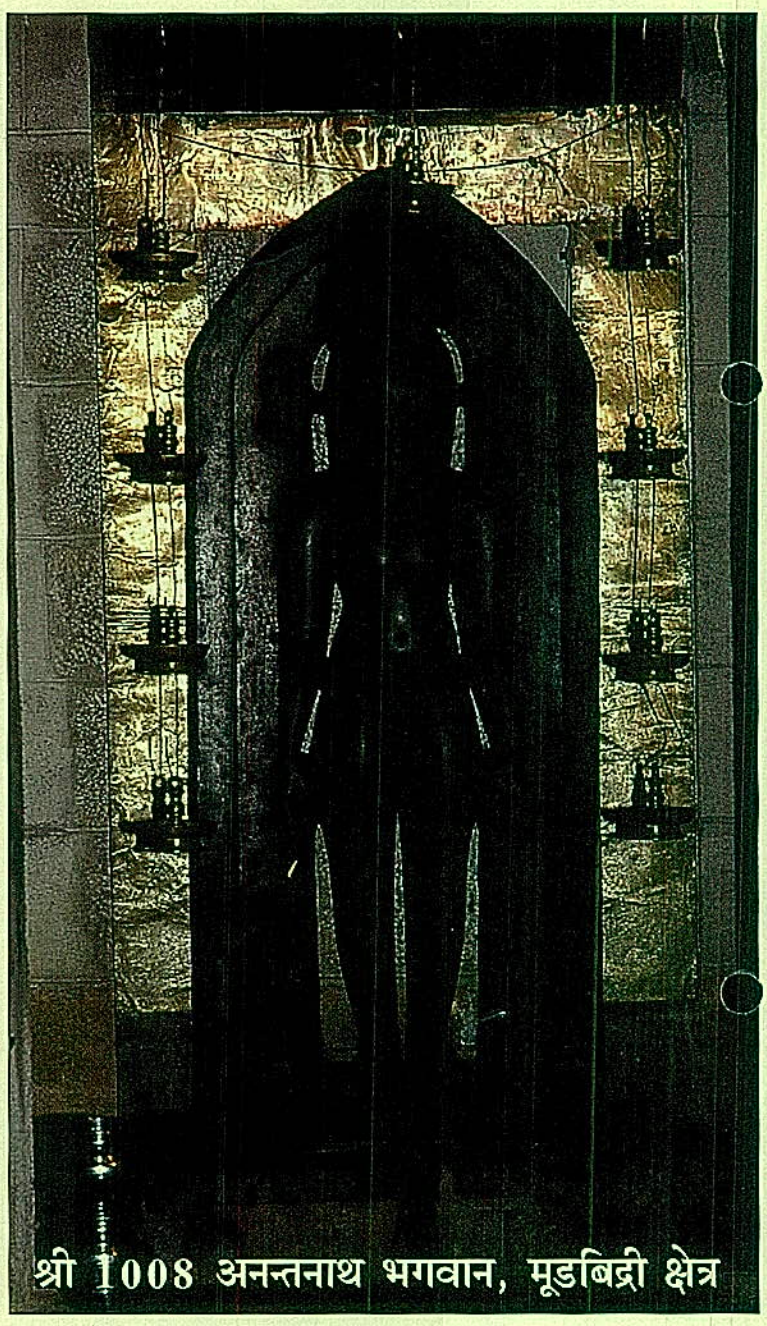

श्री 1008 अनन्तनाथ भगवान, मूडबिद्री क्षेत्र

रानी ने नौ माह व्यतीत होने पर ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी के दिन पूषा योग, रेवती नक्षत्र में पुण्यवान पुत्र को उत्पन्न किया। जन्म की सूचना जानकर सौधर्म इन्द्र अयोध्या में राजा सिंहसेन के राजप्रासाद में आया और शची के द्वारा नवजात तीर्थंकर शिशु को मँगवाकर मेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर ले गया। जहाँ उनका क्षीरसागर के जल से भरे 1008 कलशों से देवों ने अभिषेक किया तथा अनन्तजित् (अनन्तनाथ) नाम रखकर

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

भगवान् का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया।

13वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान् के बाद नौ सागर और पौन पल्य व्यतीत हो जाने पर तथा अंतिम समय धर्म का विच्छेद हो जाने पर तीर्थंकर जिन अनन्तनाथ का जन्म हुआ था, उनकी आयु भी इसी अन्तराल में सम्मिलित थी। उनकी कुल आयु तीस लाख वर्ष, शरीर पचास धनुष ऊँचा, रंग देदीप्यमान स्वर्ण के समान था, वे एक हजार आठ शुभ लक्षणों से सुशोभित थे। उनका चिन्ह सेही था।

बचपन एवं कुमार काल पचहत्तर हजार वर्ष व्यतीत होने पर वे राजा बने, उन्होंने पन्द्रह लाख वर्ष पर्यन्त राज्य किया। उन्होंने विवाह कर कामसुख भोगा। उनके पुत्र का अन्नतविजय था। एक दिन उल्कापात देखकर उनके मन में ऐसा विचार आया संसार का स्वभाव ऐसा ही है कि जो जहाँ आता है वह जाता ही है। यह दुष्कर्म रूपी बेल अज्ञान रूपी बीज से उत्पन्न हुई है, असंयत रूपी पृथिवी के द्वारा धारण की हुई है, प्रमादरूपी जल से सींची गई है, कषाय ही इसकी स्कन्धयष्टि है। बड़ी मोटी शाखा है, योग के आलम्बन से बढ़ी हुई है, अनेक रोग ही इसके पत्ते हैं, और दुःख रूपी फलों से झुक रही है। मैं इस दुष्ट कर्मरूपी बेल को शुक्लध्यान–रूपी तलवार के द्वारा आत्मकल्याण के लिए जड़मूल से काटना चाहता हूँ। इस तरह विचार करते हुए संसार से हो गया है वैराग्य जिनको; ऐसे राजा श्री अनन्तजित् (अनन्तनाथ) की भावना का अनुमोदन करने के लिए लौकान्तिक देव आये और राजा अनन्तजित् (अनन्तनाथ) की पूजा की। राजा अनन्तजित (अनन्तनाथ) ने अपने योग्यपुत्र अनन्तविजय को राज्यभार सौंप दिया। तदन्तर श्री अनन्तजित् (अनन्तनाथ) सागरदत्त नामक पालकी पर सवार होकर सहेतुक वन में गये और वहाँ बेला का नियम लेकर ज्येष्ठकृष्ण द्वादशी के दिन सायंकाल (अपरान्ह) एक हजार राजाओं के साथ पंचमुष्ठि केशलोंच कर वस्त्र त्याग कर मुनि दीक्षा ग्रहण की। मुनिव्रत ग्रहण करते ही उन्हें मनः पर्यय ज्ञान हो गया।

दीक्षा के दूसरे दिन (तृतीय भक्त दीक्षोपवासी) मुनि अनन्तनाथ आहार चर्या के लिये साकेतपुर में गये। वहाँ स्वर्ण के समान कांतिवाले विशाख नामक राजा के यहाँ आहार किया। देवों ने पंचाश्चर्य प्रकट किए। अनन्तर मुनिश्री अनन्तनाथ तपश्चरण हेतु स्थित हो गये। छद्मस्थ अवस्था के दो वर्ष बीत जाने पर चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन सायंकाल रेवती नक्षत्र में सहेतुकवन में अश्वस्थ (पीपल) वृक्ष के नीचे अयोध्या में उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। देवों ने आकार केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया।

केवलज्ञान होने के उपरान्त सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवशरण की रचना की जिसका क्षेत्रफल 5.5 योजन (कहीं–कहीं छः योजन विस्तार भी बताया है) था। समवशरण के मध्य अन्तरिक्ष में विराजमान तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् की दिव्य ध्वनि से प्राणियों ने आत्मोद्धार का मार्ग जाना।

उनके इस विस्तृत बारह सभाओं से युक्त समोशरण में 1,000 पूर्वधारी, 39,500 शिक्षक, 4,300 अवधिज्ञानी, 5,000 केवलज्ञानी, 8,000 विक्रियाऋद्धिधारक, 5,000 मनःपर्ययज्ञानी, 3,200 वादी; इस तरह 66,000 मुनि तीर्थंकर भगवान् की स्तुति करते थे। सर्वश्री सहित 1,08,000 आर्यिकाएं थीं। 2,00,000 श्रावक तथा, 4,00,000 श्रविकाएं थीं। मुख्य श्रोता 'पुरुष पुंडरीक' थे। उनके मुख्य गणधर अरिष्ट थे। कुल गणधर 50 थे। असंख्यात देव–देवियां और संख्यात तिर्यंच उनके समोशरण में थे। उनका केवल्यकाल 7,49,998 वर्ष का था। श्री अनन्तनाथ भगवान् के तीर्थ में सुप्रभबलभद्र और पुरुषोत्तम नामक नारायण हुए थे।

धर्मोपदेश पूर्वक विहार करते हुए तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् अंत में सम्मेदशिखर पहुंचे वहाँ उन्होंने एक माह का योग निरोध कर 6,100 मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया। अनन्तर चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन रेवती नक्षत्र में रात्रि के प्रथम भाग में चतुर्थ शुक्ल ध्यान धारण कर खड्गासन से निर्वाण को प्राप्त किया। श्री अनन्तनाथ के निर्वाण के साथ मुक्त हुए जीवों की संख्या 7,000 हैं। सौधर्म इन्द्रादि देवों ने आकर भगवान् का निर्वाण कल्याणक मनाया और अग्निकुमार देवों ने केश और नख के साथ मायामयी शरीर का निर्माण कर अग्निसंस्कार के साथ अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की।

तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् ने जीवों के कल्याण हेतु बताया कि जब तक यह जीव कषायों का शोषण नहीं करेगा तब तक उसे आत्म विजय प्राप्त नहीं होगी। ध्यान रूपी औषधि के द्वारा आत्मा को पाया जा सकता है। कामदेव के प्रभाव को भी आत्मध्यान की शक्ति से जीता जा सकता है। तप साधना रूप परिश्रम से आत्मा में लगे हुए कर्म मल जल कर नष्ट हो जाते हैं और उत्तम मोक्ष रूप लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। संसार में चतुर्गति रूप दुःख लगे हुए हैं। पुण्य के फल से साता (सुख) की प्राप्ति होती है किन्तु संसार का सुख भी आत्मार्थी के लिए दुःख रूप ही प्रतीत होता है। वह तो इनसे मुक्त होना चाहता है। अतः आत्मार्थी सुख और दुःख दोनों की स्थिति में उदासीन होता है। संसारी उदासीनता ही मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ होती है। हे भगवन्! आपका बताया जिनमार्ग हम सबके कल्याण के लिए कार्यकारी बने इस भावना के साथ आपको हमारा बारंबार नमस्कार है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन प्रवचनामृत

दिनाङ्क ६ नवम्बर २०१४ से ८ नवम्बर २०१४ तक सन्त शिरोमणि परमपूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में एक विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। पूज्य महाराज जी के प्रभाव से अल्प समय में ही लगभग ५० विद्वानों का आगम हो गया। गोष्ठी के मध्य पूज्य आचार्यश्री की अमृतमय वाणी सुनने को मिली। पूज्यश्री का प्रत्येक शब्द सूक्ति बनकर आता है, जिसमें गहन अर्थ छिपा रहता है। उदाहरणार्थ-

- जीव का इतना पतन नहीं होगा कि जीवत्व समाप्त हो जाय।
- यदि मोक्ष चाहते हैं तो याद कीजिए- 'परेमोक्ष हेतु'।
- जाते-जाते निर्णय हो तो विकार गायब हो जाता है।
- धर्मध्यान एक भावात्मक प्रणाली है।
- द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की सामग्री मिलना चाहिए क्योंकि अपने आप को संभालना बड़ा कठिन है।
- बिना आधार के ध्यान नहीं होता है। दुनिया में चारगुना व्यवस्था करनी होती है। ज्ञान तो है, किन्तु ध्यान नहीं है।
- अधर्म को छोड़ना ही धर्मध्यान है। अधर्म से पाप बन्ध होता है। धर्म से पूंजी मिलती है।
- आस्था और आचरण मिलकर निर्जरा के साधन हैं। इन्हें संयमलब्धि स्थान कहते हैं।
- आय आपको बढ़ाना है। सर्प, सिंह, मगर आपसे आगे बढ़ रहे हैं। आप दुर्लभ मनुष्य पर्याय का अपव्यय कर रहे हैं।
- जो परहित में संलग्न है वह श्रावक है। आजकल आय का पार नहीं, किन्तु व्यय कम हो रहा है।
- अनन्तानुबन्धी की विसंयोजना करने वाला सर्वार्थ सिद्धि में भी जा सकता है।
- आवश्यकताओं को कम करते चलिए। समय का सदुपयोग करो, अपव्यय मत करो।
- सातवें गुणस्थान तक बिना ध्यान के भी कर्मों की निर्जरा हो सकती है। भावों का खेल है।
- संवेग में घबराहट होती है। निर्वेग में घबराहट नहीं होती। अप्रमत्त अवस्था में ध्यान कार्य करता है। ध्यान का अर्थ एकाग्रता है।
- समय कम है, कार्य ज्यादा है। दृष्टि को संयत बनाइए।
- जब तक मोह का क्षय नहीं होगा, तब तक पर का अवलम्बन ले सकते हैं।
- महासत्ता का प्रयोग करो तो राग-द्वेष नहीं होगा। इसमें सब समाहित होता है।
- आत्म शब्द गत्यर्थक है। गत्यर्थक धातुएँ ज्ञानात्मक भी होती हैं।
- प्रत्येक वस्तु के साथ आत्मा का प्रयोग किया गया है। अतति, गच्छति, व्यापनोति व आत्मा । प्रत्येक द्रव्य में आत्मा है। यहाँ आत्म द्रव्य की बात नहीं की जा रही है।

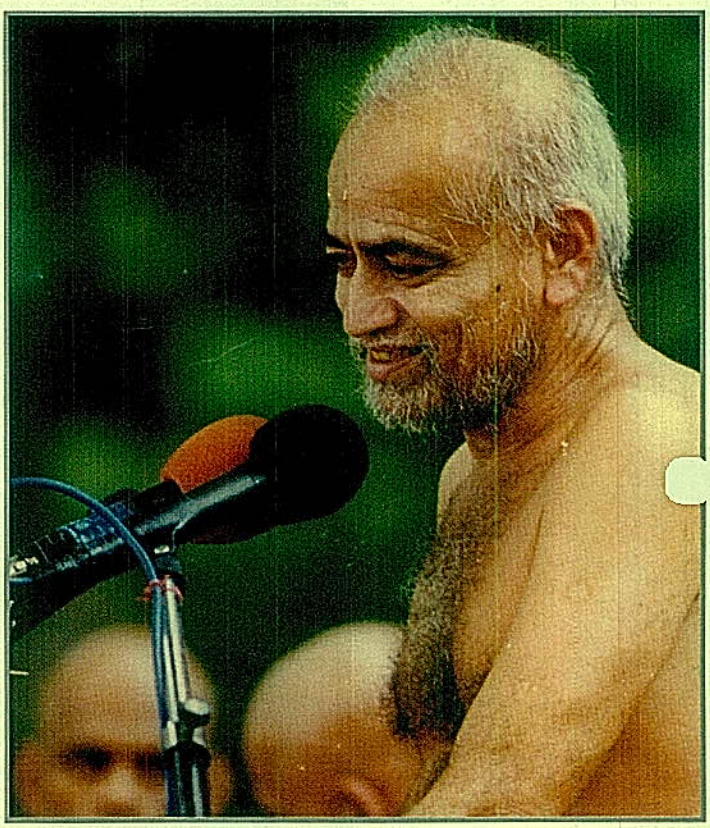

- सामायिक में बारह भावनाएँ भायें।
- चेतन सुखमय है, मोक्षमय है, कर्म से भिन्न है; यह चिन्तन की धारा है। अत: आत्मशब्द ज्ञानार्थक लिया गया है।
- सम्वेदन स्व का ही होता है, पर का नहीं।
- शोध करा सकते हैं, निर्देशक बन सकते हैं; किन्तु आत्मशोध नहीं कर सकते।
- सम्वेदन दो प्रकार का होता है-सराग सम्वेदन और वीतराग सम्वेदन।
- पाँच अणुव्रतों का विकास उपब्रंहण है।
- दो प्रकार के केवली होते हैं- द्रव्यश्रुत केवली और भावश्रुतकेवली।द्रव्यश्रुतकेवली होगे तो मुक्त नहीं हो पाओगे। स्व को विषय बनाओ, दूसरे को विषय मत बनाओ।
- लोग अवकाश प्राप्त करने के बाद विचलित हो जाते हैं-कहाँ जाएँ?
- जो देखना जानता है वह राग-द्वेष नहीं कर सकेगा।
- प्रयोजनभूत बातों के नोट्स बनाओ। प्रयोजनभूत निर्जरा है।
- राग-द्वेष से रहित सोना होता है। राग-द्वेष से युक्त लोहा होता है जो जंग खाता है। लोहा भी बनो तो शुद्ध बनो।
- श्रावक रागी है। रागी बनना हो तो धर्मानुरागी बनो, विषयानु - रागी नहीं। देव, शास्त्र, गुरु को ध्यान का विषय बनाओ।
- उपभोग तथा भोग पाप बन्धक है। समितियाँ लगाम हैं। श्रावक के

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दु:ख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

सामायिक से भी असंख्यात गुणी निर्जरा सोता हुआ मुनि करता है। अपनी दुकान बदल कर चलाओ।

- भोग निर्जरा के कारण बतलाना 'गाथा' का गला घोंटना है।
- वर्ण, पुद्गल का परिणाम है। मुनि महाराज के लिये यह निर्जरा का कारण है।
- जैन ब्राह्मण की परिभाषा आदिपुराण में है। विश्राम में भी मूर्च्छित मत हो।
- आत्मा से परमात्मा देखना पर को देखना है।
- अपाय धर्मध्यान हम हमेशा करते है। भगवन् सबका कल्याण हो।
- ज्ञान के द्वारा जानना ही भोग है।
- ज्ञातृत्व आत्मा का स्वभाव है। संसार अवस्था में ज्ञान कमजोर होकर ज्ञेय में भटकता है।
- प्रमाता बनो, यही प्रमेय कमल मार्तण्ड है।
- शब्द का आविष्कार विज्ञान नहीं कर सकता।
- मन के आविष्कार में जीव का योगदान है।
- वीतराग विज्ञान ही ज्ञान है।
- अध्यात्म वाचन नहीं, पाचन की वस्तु है।
- गुरुदेव कहते थे अतीत की स्मृति रखो, प्रतीति नहीं। स्मृति आना स्वाभाविक है। भविष्य आगे आ जाता है, भव्यत्व आगत के रूप में आयेगा। सम्वेदन अतीत का नहीं, अनागत का भी नहीं होना चाहिए।
- अपने भाग्य को छोटा मत समझो, पुरुषार्थ करो। याचना नहीं।
- मैं ही उपास्य जब हूँ, स्तुति अन्य की क्यों?
  मैं साहूकार जब हूँ, फिर याचना क्यों ?
- भोगों को याद मत करो। द्रव्य का परिणमन चल रहा है।
- जिनेन्द्र भगवान् के मार्ग में गुरुवचन ही पाथेय है। गुरुवचन उपकरण हैं। गुरु ने प्राणों में भी अपने वचन फूँक दिये हैं।
- जन्म के साथ यथाजात रूप है। मुनि का यथाजात रूप अंत तक रहेगा।
- आत्मा तक जो ले जाती है, वह विनय है। विनय मोक्ष का द्वार है।
- श्रावक और श्रमण दोनों पथ पर आरूढ़ हैं। चोरों को रोको, नहीं तो निकल नहीं सकोगे।
- तीर्थङ्कर को भी समितियों और अनुप्रेक्षाओं का पालन करना पड़ता है। मन को नहीं हटाओगे तो वह आप को हटा देगा। ऋषभदेव भगवान् को तप में एक हजार वर्ष लग गये। दो सौ वर्ष ही कम से कम आहार हुये होंगे।
- पाँच इन्द्रियाँ उपकरण हैं। श्रुत मन की खुराक है। श्रुत का अर्थ होता है सुना गया। श्रुत का आधार दिव्यध्वनि है। ज्ञान स्व-पर प्रकाशी है किन्तु ज्ञेय के आकार भी है।
- समल से विमल होने का मार्ग गुरु कृपा से मिला था।
- शीत और उष्ण को स्पर्शन इन्द्रिय से सहन करो।
- शरीर ज्ञान का उपकरण है।
- नो कर्म चेतना नहीं है। ज्ञान चेतना जीवन है।
- पाप-पुण्य के फल में विषाद और हर्ष मत करो। देखो, जानो, बिगड़ो नहीं।
- अच्छे-अच्छे दृश्य रति, अरति रूप हैं। अपने आप को यथावत् समझो। ज्ञान का प्रयोग ध्यानकाल में रुक जाता है।
- इष्ट और अनिष्ट वस्तुओं के विषय में चिन्ता और रोष मत करो। आत्मा का आत्मा में ही रमण करना परम ध्यान है।
- ध्यानकेन्द्र मत बनाओ, ध्यान तो पूरे लोक का होता है।
- प्रमाण और अप्रमाण ज्ञान में होता है।
- ज्ञानपरायण योगी अपनी देह को भी नहीं जानता है। मन ही श्रुत के विकल्प का कारण है। आप तो वी.आई.पी. बनना चाहते हैं।
- ज्ञान को विराम दो, बहुत शांति मिलती है। ज्ञान मौन रहना चाहता है। ज्ञान दु:ख का मूल है।, ज्ञान ही भव का मूल है। राग सहित ज्ञान प्रतिकूल है और राग रहित ज्ञान अनुकूल है। समता सुख का मूल है। ज्ञान में मत
  डूबो, समता में डूबो।
- दर्शन इंजेक्शन है, ज्ञान सुई है।
- समता शोध है। समता का उल्टा तामस होता है। तामस को हटा दें, उल्झनों को सुलझाओ।
- जो जिस आवश्यक का काल है उसको उसी समय करना चाहिए।
- सब-कुछ करते हुए अपने को देखो।
- उत्पन्न हुए उदय के भोग में नित्य वियोग बुद्धि रखो।
- न भूत की स्मृति, न अनागत की अपेक्षा।
  भोगोपभोग मिलने पर भी उपेक्षा।
  ज्ञानी, जिन्हें विषय तो विष दीखते हैं,
  वैराग्य-पाठ उनसे हम सीखते हैं।।

(कुन्दकुन्द का कुन्दन, २२८)

- शब्दों के माध्यम से हम आत्मा की यात्रा करते हैं, यह मात्र पौद्गलिक है। तीर्थंकर भगवान् की वाणी तीनों
  लोकों के लिए हितकर, मधुर और विशद है, उनके गुण अनन्त है। वे संसार को जीतने वाले हैं, उन्हें
  नमस्कार हो।
- अमृत की एक बूंद ही पर्याप्त है।
- धन निर्ग्रन्थ होने में बाधक है।
- सविकल्प अवस्था में प्रतिक्रमण होता है। निर्विकल्प अवस्था में वह विष कुम्भ है।
- हमें आजाद हुए बहुत वर्ष हो गये, किन्तु हम अपने निवासियों को नागरिक नहीं बना पाये।
- अंग्रेजों के आने से पूर्व इस देश में वसंत था। आज भी वसंत की प्रतीक्षा है। 'इण्डिया' हटाओ, 'भारतवर्ष'
  लाओ।

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

श्री सम्मेदशिखराय नमो नमः

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स. सिं. सुधीरकुमार जी जैन की शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा

दिनॉक 11.01.2015 को सुबह 8 बजे श्री सुधीर कुमार जी जैन, अध्यक्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सपत्नीक मधुबन पहुँचे । 8.30 बजे गुणायतन मे मुनिद्वय श्री प्रमाणसागर जी, विराटसागर जी का आशीर्वाद प्राप्त कर मधुबन स्थित मन्दिरों के दर्शन किये। साधुओं की आहारचर्या के बाद भोजनादि से निवृत्त हो 11.00 बजे निहारिका भवन में पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी एवं शाश्वत ट्रस्ट के मंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी एवं श्री संजय जी मैक्स इन्दौर के माध्यम से भेजे गये श्री गुरूनानी जी एवं मधुबन कार्यालय के प्रबंधक श्री सुमन जी आदि के साथ मिलकर शिखरजी विकास कार्यों पर विचारणा हुई ।

दोपहर 1.45 बजे पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागरजी गुरुदेव के समक्ष समवशरण विधान के विषय में चर्चा हुई तथा शिखरजी की अनेक धार्मिक गतिविधियों से अवगत हुए। सायं 03.00 बजे श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत यात्रा के दौरान टोंक पर सायंकालीन आरती कर रात्रि डाकबंगला में विश्राम किये ।

दिनांक 12.01.2015 को सबेरे 06.30 बजे डाकबंगला से टोकों की वंदना हेतु प्रस्थान किये। सम्पूर्ण पर्वत का निरीक्षण कर कार्यादेश दिये गये –

समस्त तीर्थ के सभी टोकों का दर्शन, पूजन, भक्ति करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पहाड के हमारे स्टाफ को साथ में रखकर कार्यादेश दिये गये जिसमें मुख्यतः टोंकों पर चल रहे मरम्मती कार्य में सुधार लाना, श्री पार्श्वनाथ टोंक के रिपेरिंग कार्य में शेष कार्यो को अविलम्ब पूरे करना तथा दरवाजे, खिडकियां लगवाना। कुछ टोंक पर मार्बल का पॉलिश बाकी है तथा कुछ टोंक पर चरण घिस गये हैं आदि विषय में निर्देश दिये गये। सुरक्षा गार्ड को पार्श्वनाथ टोंक की सुरक्षा में ज्यादा सावधानी बरतने के लिए आदेश दिया गया। बाहर से और पुजारियों की नियुक्ति करनी हो तो आवश्यकतानुसार ऐसा किया जाय। चिकित्सा केन्द्र को तथा डाक बंगले की भोजन आदि व्यवस्था को सुधारने के लिए विस्तृत आदेश दिये गये। जरुरतमंदों को 10 ट्राइसिकल एवं कम्बल वितरण हेतु चयन किया जाय तथा भाताघर एवं पार्श्वनाथ टोंक आदि पर सोलार सिस्टम से बिजली की व्यवस्था करने की सूचना दी गई। टोंक पर अर्घ्य के मेटल बोर्ड तथा धूप के स्टैण्ड लगाने को तथा उन पर नया पेंट करने के लिए कहा गया। कर्मचारियों का जीवन बीमा लिया जाय ऐसा निर्देश दिया। कहीं–कहीं टोंक का रास्ता सकरा है उसे चौडा किया जाय तथा बैकिंग आवश्यकतानुसार लगायी जाय। समन्वय समिति की ओर से भाताघर पर जो जलपान की व्यवस्था है उसके विषय में एक बैनर सा ही लगाया जाय और नाश्ता एक ही स्थान से वितरित हो ऐसा सुझाव दिया।

दिनांक 12.01.2015 को पर्वत वन्दना से वापस 3.15 बजे आकर मध्यलोक में विराजमान आचार्य श्री विनम्रसागर जी ससंघ के दर्शन किये । राश्ट्रीय अध्यक्ष स. सिं. श्री सुधीर कुमार जी जैन ने अपना परिचय देते हुए कहा कि आज मैं तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रथम सेवक हूँ । आचार्यश्री ने पर्वत की सडक मरम्मत पर जोर देते हुए पालीताना जैसे क्षेत्रों की तरह व्यवस्था करने हेतु आशीर्वाद प्रदान किया । पर्वत पर डाकबंगला के समीप बने संतनिवास के बाजू में आहार चर्या हेतु टीन शेड बनवाने का सुझाव आचार्य श्री ने दिया। चौपडाकुण्ड मन्दिर की व्यवस्था सम्बंधित भी विचार प्रस्तुत किये । श्री मोती भैयाजी ने भी उपरोक्त कार्यों में सहयोगी बनने के भाव प्रगट किये।

दिनाँक 13.01.2015 को सुबह 7.30 बजे पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी, औरंगाबाद एवं कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य श्री प्रभात जी सेठी, गिरिडीह तथा शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी सहित राँची के लिए प्रस्थान किये । राँची 10.30 बजे पहुँचकर श्री एम. पी. अजमेरा जी के घर पर राँची जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ मीटिंग आहूत की गई । वहाँ के पूर्वाध्यक्ष श्री पूरनमल सेठी एवं पूर्व मंत्री तथा शिखर संस्कार के सदस्य श्री पदमचन्द्र जी छाबडा ने शिखरजी विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किये । अध्यक्ष श्री नरेन्द्र पांड्या जी एवं शिखर

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा के दृश्य

रॉंची जैन समाज के प्रमुख श्री पूरनमल जी जी सेठी व पदमचंन्द्र जी छावडा से बात करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर जी साथ में हैं कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम.पी. अजमेरा जी

रॉंची में ए.डी.जी.पी. श्री के.एस. मीना के चेम्बर में मधुबन की समस्याओं पर अपील करते हुए कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम.पी. अजमेरा साथ में तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री स. रि. सुधीर कुमार जैन, पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी एवं समाज के वरीय श्री महावीर प्रसाद जी सोगानी तथा युवा कार्यकर्ता श्री प्रभात जी सेठी।

श्री के.एस. मीना ए.डी.जी.पी. के चेम्बर से बाहर आते हुए समस्त जैन दल

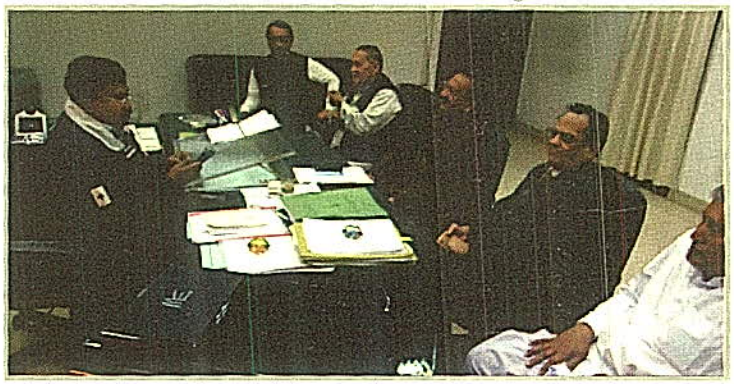

रॉंची के आर पुलिस महानिदेशक श्री रेंजी डुंगडुंग को मधुबन समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए समाज के वरीय श्री महावीर प्रसाद सोगानी, कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम. पी. अजमेरा एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी तथा पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी तथा युवा कार्यकर्ता श्री प्रभात जी सेठी

जैन समाज रॉंची द्वारा संचालित मेडिका हॉस्पिटल में श्री पूरनमल जी सेठी एवं श्री एम. पी. अजमेरा परिवार के बीच राष्ट्रीय अध्यक्ष स.रि. श्री सुधीर कुमार जी जैन ।

कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम. पी. अजमेरा से रॉंची जैन समाज के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी ।

मंचासीन पदाधिकारीगण

राष्ट्रीय अध्यक्ष का बुके से स्वागत करते हुए रॉंची समाज के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी पाण्ड्या।

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है ।

संस्कार के सदस्य तथा ग्राम विकास के कॉर्डिनेटर श्री नरेश सेठी ने विकास कार्यों पर जोर देते हुए भाव व्यक्त किये । सभा में उपस्थित श्री महावीर प्रसाद सौगानी जी ने कहा कि गुरूदेव प्रमाणसागर जी 1. बिजली 2. पानी 3. सडक कार्यों के लिए श्री अजमेरा जी को जरूर याद करते हैं ।

श्री अजमेरा जी ने अपने वक्तव्य में (1) एजुकेषन (2) मधुबन क्षेत्र की साफ सफाई (3) संस्कार विद्यालय (4) नषामुक्ति एवं षाकाहार (5) यूनियन संघ के साथ अच्छे संबंध (6) पेट्रोलिंग की विधि व्यवस्था (7) तीर्थंकर पार्क (8) रैन वसेरा आदि कार्यों पर पहल करने के लिए मूलभूत प्रयास किये जाने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये ।

श्री अजमेरा जी ने अपने घर पर आये लोक सेवा समिति के अध्यक्ष श्री नौसाद आलम से तीर्थक्षेत्र कमेटी के राश्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी का परिचय कराया उन्होने कहा कि इनके गौंव में विकास के बहुत सारे कार्य किये जा रहे हैं बताया गया कि श्रीमति अजमेरा ने उनके गाँव के लिए चापाकल हेतु एक लाख का सहयोग दिया एवं कम्बल आदि वितरण करवाए गये । श्री अजमेरा जी के प्रोजेक्ट राँची सर्किल में ही नहीं अपितु समग्र झारखण्ड में प्रधान माने जाते हैं ।

श्री छीतरमल जी पाटनी ने मधुबन के यूनियन संघ पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भोजनालय में कूपन वितरण होने के बाद कार्यरत समस्त स्टॉफ रैली में चला गया ऐसी स्थिति में 200 यात्रियों को स्वयं खिचडी बनाकर खिलाये। श्री पाटनी साहब ने आचार्य चन्द्रसागर जी महाराज द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी मधुबन को प्रदत्त भूखण्ड शाश्वत ट्रस्ट को स्कूल चलाने हेतु सौंपने की अपील की ।

पूर्वांचल के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी ने उक्त भूमि के संदर्भ में अनुशंसा प्रकट की परन्तु मैनेजिंग कमेटी में तीर्थक्षेत्र कमेटी के कम से कम पाँच प्रतिनिधि होने की शर्त दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स.सि. सुधीर कुमार जी जैन ने कहा कि श्री सेठी जी की अनुशंसा पर विचार किया जा सकेगा। राँची समाज से तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यों की संख्या अधिकाधिक हेतु अध्यक्ष द्वारा अनुरोध किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि कल पुरूलिया जैन समाज के लोगों से मुलाकात करेंगे। सभी राज्यों में सदस्यता अभियान चलाया जाय। प्रत्येक परिवार को तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य बनाकर कमेटी से जोडने का अथक प्रयास होना चाहिए । राष्ट्रस्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह कराने हेतु प्रेरित किया गया । श्री जैन ने डूमरी मोड पर गेट लगवाना, रैन बसेरा आदि 5 शिलान्यास (उदघाटन) अपने कार्यकाल में करने की भावना प्रकट की। धर्मशालाओं में लगाये गये टेलीविजन पर मात्र न्यूज चैनल एवं धार्मिक चैनल देखने की सुविधा देने का सुझाव दिया।

श्री पूरनमल जी सेठी, महावीर प्रसाद जी सौगानी, श्री धर्मचन्द्र जी रारा एवं कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम. पी. अजमेरा आदि ने कॉर्डिनेशन कमेटी को पावरफुल बनाने का सुझाव व्यक्त किया ।

राँची में जैन समाज द्वारा बनाया गया हॉस्पिटल जिसका संचालन मेडिका द्वारा किया जा रहा है, तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को अवलोकन कराया गया । बताया गया कि 170 मेम्बर मेडिका से जुडे हैं जिनके नाम पर इलाजरत रोगी को 13 प्रतिशत छूट दी जाती है । राँची जैन समाज ने एक माल्टी नामक ग्राम को आदर्ष ग्राम भी बनाया है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी सह राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम.पी. अजमेरा साहब जैन समाज दल के साथ सायं 3.45 पर एडिशनल डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस के श्री के.एस.मीना के चेम्बर में जाकर अपनी समस्याएँ प्रस्तुत कीं। माननीय मीना साहब ने गिरिडीह एस.पी. को फोन पर ही विन्दु समस्याओं का जायजा लिया तथा कियान्वयन हेतु आष्वस्त किया गया। साथ ही एडिशनल डायरेक्टर जनरल आफ पुलिस स्पेशल ब्रांच के श्री रेगी डंग डंग से भी मुलाकात कर अपनी समस्याओं सम्बंधित 3 पेज का मेमोरेण्डम प्रस्तुत किया ।

राँची जैन समाज के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी पाड्या ने सायं 7.00 बजे माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स.सि. सुधीर कुमार जी जैन एवं पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी सहित श्री छीतरमल जी पाटनी एवं श्री प्रभात जी सेठी आदि पदाधिकारियों का शॉल माला से सम्मान किया । अध्यक्ष महोदय ने सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज का सेवक होने के नाते मैं सभी कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करता हूँ । राँची में आप

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है ।

शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा के दृश्य

श्री स. सि. सुधीर जी का शॉल से अभिनन्दन करते हुए श्री महावीर प्रसाद सौगानी जी रॉची साथ में हैं श्री धर्मचन्द्र जी सरा एवं अन्य ।

कॉर्डिनेटर कमेटी के अध्यक्ष श्री एम.पी. अजमेरा जी को बुके से सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी ।

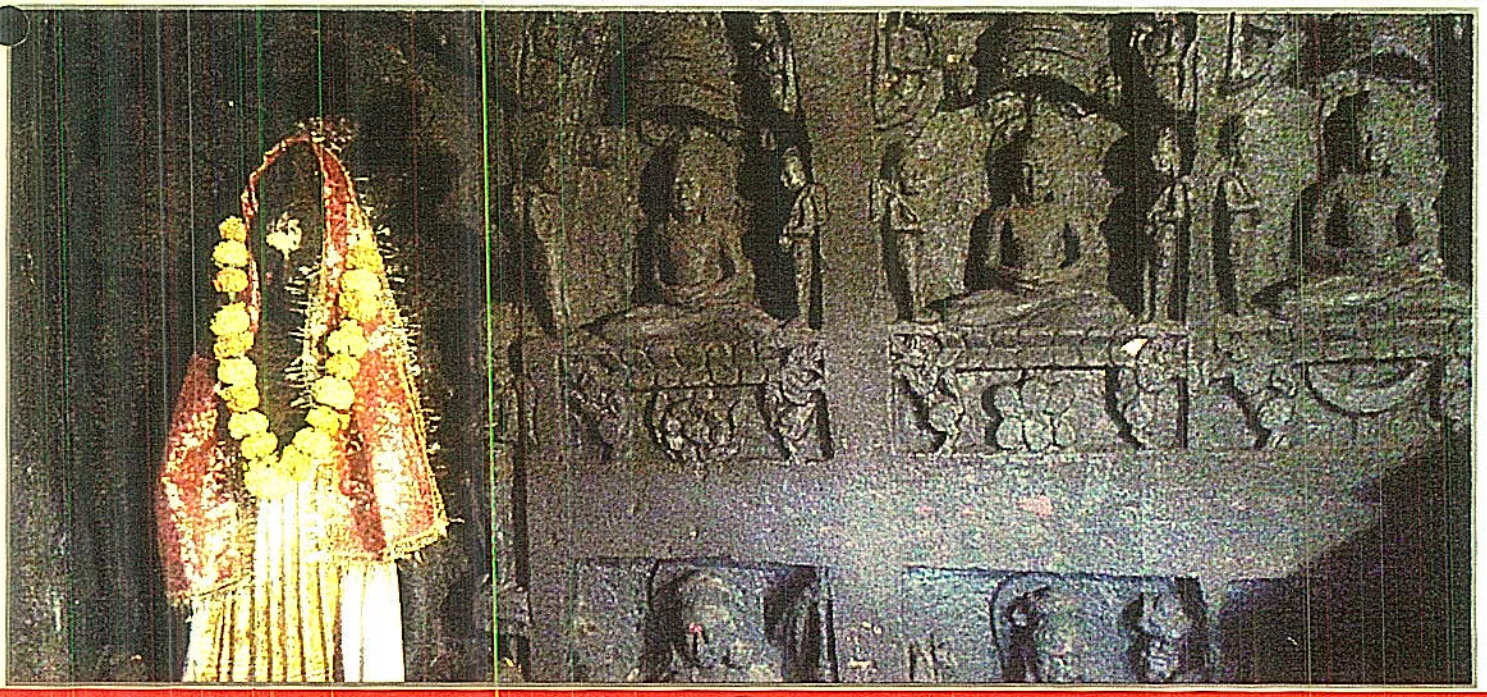

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

सबकी मुस्कराहट का राज होना चाहिए । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर हमें अनुगृहीत करें । निम्नांकित पंक्तियों में अध्यक्ष महोदय ने भाव व्यक्त किये–

रोशनी क्यों न आयेगी हमारे आँगन में,
हम अँधेरे को निगल जायेंगे,
हम सबको एक होना है ।
बिना सहयोग के कुछ कार्य हो सकता नहीं,
हमें चट्टानों को पलटना है,
एक छोटे से पत्थर से हो सकता नहीं ।

अंत में श्री धर्मचन्द्र जी रारा ने अध्यक्ष महोदय की सोच को सकारात्मक बताते हुए सभा का समापन किया । रात्रि विश्राम राँची में श्री एम.पी. अजमेरा जी के घर किये।

दिनाँक 14.01.2015 को सबेरे 6.30 बजे राँची से प्रस्थान कर 9.30 बजे पुरूलिया पहुँच कर दर्शन किये । पुरूलिया जैन समाज ने माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित पदाधिकारियों का तिलक, मालादि से सम्मान कर बैठक रखी गई । समाज के वरीय श्री घिसालाल जी काला एवं श्री महावीर प्रसाद जी दगडा सहित मंत्री श्री संतोष जी ने बताया कि यहाँ पर जैन समाज के 40 परिवार निवास करते हैं। आसपास के गाँवों में जैन मूर्तियों के भग्नावशेष प्राचीन समय में जैन समाज की बाहुल्यता के प्रतीक हैं। श्री जम्बूकुमार जी एवं श्री अनिल कुमार जी पाटनी ने कहा कि जगह–जगह निकलीं मूर्तियों को ऐसे यथोचित स्थान पर विराजमान किया जाये जहाँ पूजन प्रक्षाल की व्यवस्था हो सके । एक संस्था ने पच्चीसों लाख खर्च कर मूर्तियाँ विराजमान कर दी हैं परन्तु वहाँ अपना कोई अधिकार समझ में नहीं आता, ऐसा दिखता है कि वहाँ मूर्तियों को फँसा दिया गया हो। एक मंदिर नहीं बल्कि गोदाम बना दिया गया है, ऐसा समाज ने बताया । ब्र. श्री मनीष जी ने भी आसपास के क्षेत्रों एवं यहाँ के पारसनाथ पर्वत के बारे में जानकारी दी । ब्र. भैया जी ने बताया कि यहाँ की भूमि महावीर स्वामी के नाम पर है जैसे सिंहभूमि, मान भूमि, वीर भूमि आदि ।

पुरूलिया से 11.00 बजे प्रस्थान कर 11.30 बजे भांगडा मंदिर पहुँचे । लगभग 300 वर्ष प्राचीन प्रतिमा के दर्शन किये । श्री साहू जी परिवार की ओर से यहाँ जमीन लेकर निर्माण कार्य कराया गया । यहाँ समाज का एक भी घर नहीं है बाजू वाले घर से मंदिर की चाभी लेकर ताला खोला । भांगडा से 11.35 बजे प्रस्थान कर घातकी खण्ड 12.30 बजे सर्वधर्म मन्दिर में शांतिनाथ आदि भगवान की तीन प्रतिमाओं के दर्शन किये । यहाँ पर अन्य मतावलम्बी पूजा करते हैं । यह मूर्तियाँ बाजू तालाव से प्राप्त हुई । यह मूर्तियां एक घर जैसे में विराजमान हैं। दोपहर 01:00 बजे पाकबीरा पहुँचकर वहाँ के सौम्य स्थान को देखकर मन पुलकित हो गया । तालाब किनारे काफी भग्नावशेष देखे गये । पाकबीरा में एक मंदिर चबूतरा बना है जहाँ काले पाषाण की खडगासन मूर्ति है । यहाँ पर प्रणामि वॉक्स (दान पेटी) रखे हैं। पाषाण की शिलाओं से निर्मित शिखर तीन स्थानों पर अलग–अलग मंदिर बने हैं। तीनों मंदिरों में खडगासन एक एक प्राचीनतम चौबीसी प्रतिमा विराजमान है । द्वितीय प्रांगण में एक धर्मशाला में 4 कमरे 1 हॉल है । यहाँ पर निर्मित मंदिर में तीन प्रतिमाएँ है। इसका निर्माण पुरूलिया जैन समाज के मामा जी के देखरेख में हुआ है।

पाकबीरा से 1.30 बजे मानबाजार के लिए प्रस्थान किये। वरमसिया ग्राम के मंदिर में प्राचीन मूर्तियों के दर्शन किये। यहाँ पर रखी पालकी देखकर प्रतीत होता है कि रथ यात्रा होती होगी । संगीत में यहाँ पर बावनगान विद्या का प्रयोग किया जाता है । दोपहर 2.30 बजे मानबाजार राजावाडी पहुँचकर मंदिर में खडगासन आदिनाथ भगवान सहित प्राचीन तीन प्रतिमाओं के दर्शन किये। यहाँ पर रखा रथ भगवान की पालकी के स[illegible] निकालते हैं । 400 वर्ष प्राचीन बरगद का विशाल काय वृक्ष का अवलोकन किया । मान बाजार मे भोजन कर 3.30 बजे वापस रवाना हुए एवं सायं 5.50 बजे पुरूलिया आ गये । समाज के अध्यक्ष श्री सरावगी जी से मिलकर चारों ओर फैली मूर्तियों को व्यवस्थित मंदिर में एकत्रित करवाने का प्रस्ताव दिया । कार्यकर्ता श्री संतोष जी ने भी समस्त मूर्तियों को पाकबीरा में एक जगह करने का सुझाव दिया।

अध्यक्ष महोदय ने समाज को उत्साहित कर प्रभावशील बनकर कार्य करने की प्रेरणा दी तथा लोगों को तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनाये जाने पर जोर दिया। कमेटी की सदस्यता हेतु फॉर्म श्री प्रभात जी सेठी उपलब्ध करायेंगे। रात्रि 7.30 बजे पुरूलिया से खण्डगिरि उदयगिरि के लिए प्रस्थान किये ।

शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा के दृश्य

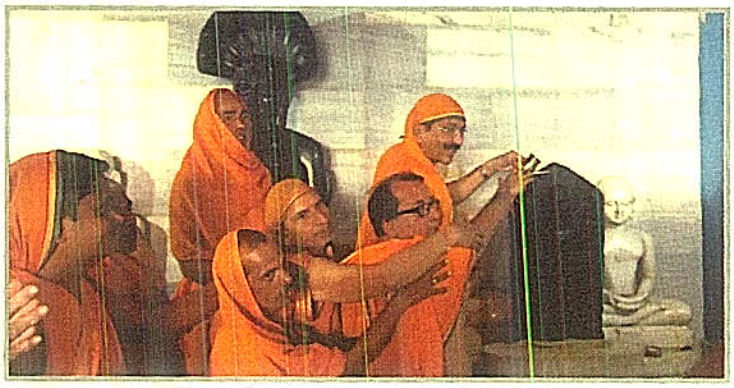

अभिषेक करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी तथा अन्य

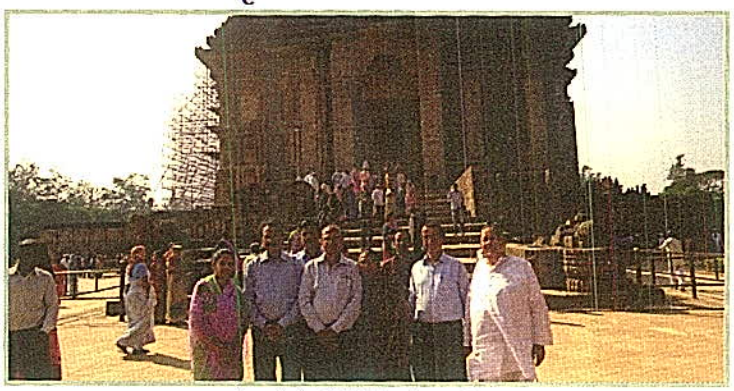

कोणार्क के मंदिरों के दर्शन करते हुए

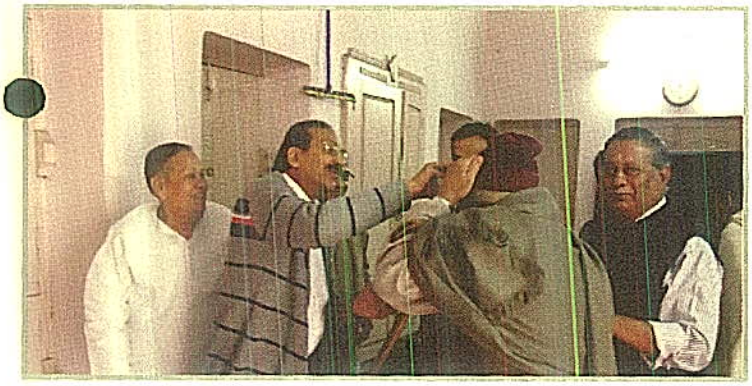

पुरूलिया जैन समाज के वरीय पदाधिकारी अध्यक्ष महोदय का स्वागत करते हुए ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी एवं पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी तथा शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी का स्वागत करती हुई पुरूलिया जैन समाज।

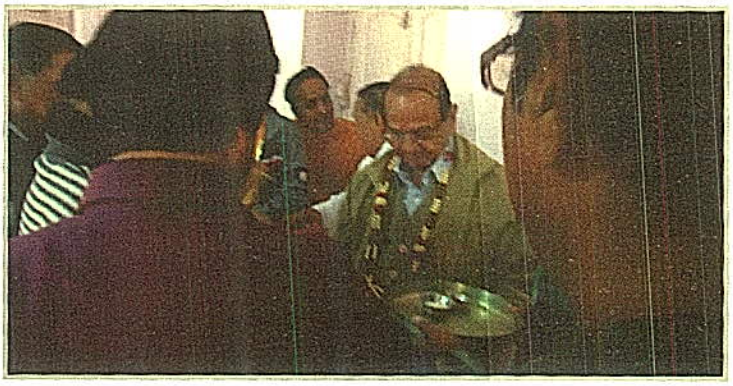

शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी का स्वागत करती हुई पुरूलिया जैन समाज ।

कार्यकारिणी कमेटी के युवा सदस्य श्री प्रभात जी सेठी का स्वागत करती हुई पुरूलिया जैन समाज ।

पुरूलिया में जैन समाज के बीच मीटिंग करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी ।

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

दिनाँक 15.01.2015 को प्रातः 8.30 बजे खण्डगिरि धर्मशाला पहुँचे दैनिक कार्य से निवृत होकर 11.30 बजे खण्डगिरि पर्वत पर गये वहाँ 35 गुफाओं को देखा । जहाँ गुफा के अंदर पत्थर पर ही मूर्तियाँ बनी हैं । कहा जाता है कि यहाँ प्राचीन समय में 700 गुफाएँ थीं जो अब मात्र 30–35 गुफाएँ शेष हैं इन गुफाओं के नाम अनंत गुफा आदि हैं । यहाँ के राजा खारवेल द्वारा 2200 साल पहले बनवाये गये मन्दिर के दर्शन किये । कलिंग देश से 500 मुनि मोक्ष गये । इस पर्वत का नाम कुंवारी पर्वत भी है । द्वितीय मंदिर में विराजमन श्री पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन किये । तृतीय मंदिर की वेदी बनाई जा रही है जिसमें पदमासन आदिनाथ की भव्य प्रतिमा विराजमान होगी। खण्डगिरि में चल रहे निर्माण कार्य का अध्यक्ष महोदय ने जायजा लिया । धर्मशाला में 30 कमरे एवं भोजनालय है । बंगाल विहार उडीसा कमेटी खण्डगिरि ने 11 लाख के सहयोग हेतु श्री अध्यक्ष महोदय को आवेदन दिया।

पूर्वांचल के अध्यक्ष द्वारा अनुशंसित 7 लाख रूपये निर्माण कार्य हेतु भेजने की व्यवस्था की जायेगी । अध्यक्ष महोदय ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का शिलापट्ट लगाने का सुझाव दिया । यहाँ कार्यरत श्री सचिन शाह ने बताया कि पर्वत के खण्ड–खण्ड हो जाने से इसका नाम खण्डगिरि एवं सूर्य की प्रथम किरण का उदय होने से इसे उदयगिरि कहा जाता है । खण्डगिरि से 12.30 बजे वापस हो गये । यहाँ पर आने वाले पर्यटकों से भी अध्यक्ष महोदय मिले । नवदेवता की पाषाण पर मूर्तियाँ हैं जो पुरातत्व विभाग के अधीनस्थ हैं इसी पर्वत पर एक विशाल चट्टान पर जलकुण्ड बना हुआ है। हमें बताया गया किं आचार्यश्री विद्यासागर जी सामायिक हेतु यहां बैठते थे । महोदय ने कहा इस सिद्धक्षेत्र पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के 10–15 बोर्ड लगवाये जायें ।

दोपहर 12:40 पर उदयगिरि गये बताया गया कि 26 जनवरी से 2 फरवरी के बीच पडने वाले प्रथम रविवार को इस स्थान पर जैन समाज द्वारा पूजा होती है जवकि यह पर्यटक स्थल है । पर्वत धरातल पर मन्दिर आकार की चट्टान है । भुवनेश्वर की जनसंख्या करीब 25 लाख बताई गई ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने वहाँ के क्षेत्रीय मंत्री श्री पवन कुमार जी वाकलीवाल को बताया कि 7 लाख की राशि से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा निर्माण करवाया जाये । चल रहे मुकदमे को मजबूती से देखें, हम आपके साथ हैं। 3.30 बजे क्षुल्लक श्री गोसलसागर जी महाराज के साथ बैठक हुई महाराज साहब ने बताया कि 2002 से यहाँ हूँ । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कार्य करने में आगे कोई बाधा नहीं आयेगी। 450 कि.मी. में यह एक इकलौता क्षेत्र है, यहाँ का कार्य करना है । यहाँ के प्रचार प्रसार हेतु जिनवाणी आदि चैनलो से सम्पर्क करें, जिससे यहाँ आये यात्री मात्र कटक और जगन्नाथपुरी देखने नहीं अपितु यहाँ दर्शन करने आयें ।

क्षुल्लक श्री गोसलसागर जी ने बताया कि पूज्य सुधासागर जी आदि महाराज साहब से भी यहाँ के कार्यों में मार्गदर्शन ले रहे हैं । सुधासागर जी ने आश्वस्त किया कि 50–60 लाख भी खर्च हों तो हम करायेंगे । गुफा का कार्य करावें । कमल कुमार जी धनावद ने यहाँ के केस लडे । वह यहाँ की जानकारी रखते हैं । सन् 2005 में क्षुल्लक जी का चौमासा यहाँ पर हुआ स्टे लगने के कारण यहाँ से विहार किये तथा सन् 2012 में स्टे खत्म हुआ क्षुल्लक जी ने बताया कि यहाँ का प्रोजेक्ट आचार्य श्री के मार्गदर्शन में ही चल रहा है । यहाँ का पंचकल्याणक अप्रैल 2015 में होना निश्चित किया है । शिलालेख को 4 भाषाओं में देने का प्रावधान है । क्षुल्लक जी ने 1200 वर्ष प्राचीन प्रतिमाओं के अपने कमरे में दर्शन कराये जिनके पंचकल्याणक होंगे ।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा के दृश्य

पुरूलिया मंदिर के सामने अध्यक्ष श्री स.सि. सुधीर जी सपत्नीक एवं शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी सपत्नीक एवं पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी साथ में श्री प्रभात जी सेठी

भांगडा गॉव के मंदिर के सामने सपत्नीक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जी एवं शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल जी पाटनी सपत्नीक एवं पूर्वांचल कमेटी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सेठी साथ में श्री प्रभात जी सेठी

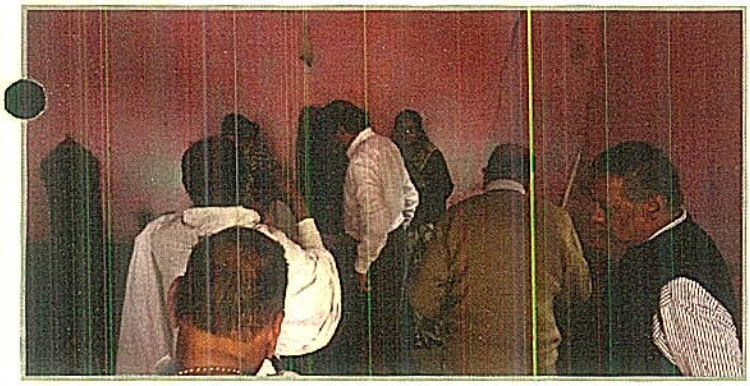

धातकी गॉव के मंदिर में ब्र. मनीष भैया एवं पुरूलिया समाज के पदाधिकारियों सहित तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी ।

पाकबीरा में मूर्ति के बारे में बताते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष साथ मे हैं श्री प्रभात जी सेठी एवं श्री छीतरमल जी पाटनी सपत्नीक ।

पाकबीरा में रखी खण्डित मूर्ति का अवलोकन करते हुए श्री पाटनी जी सहित अध्यक्ष महोदय

पाकबीरा में म्यूजियम में पुरूलिया समाज एवं मनीष ब्र. जी के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष अवलोकन करते हुए ।

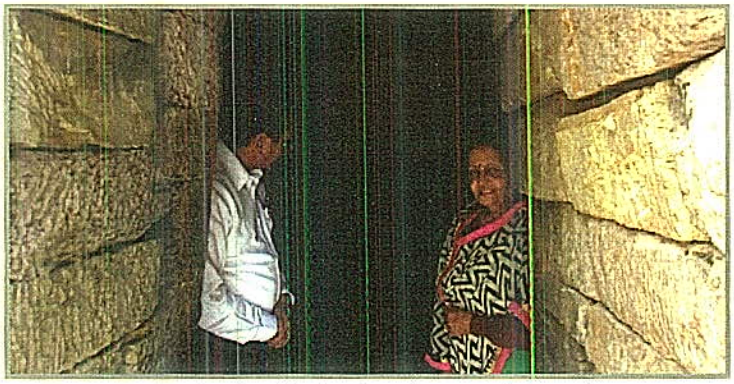

पाकबीरा में प्राचीन मंदिर के दर्शन करते अध्यक्ष महोदय सपत्नीक

खण्डगिरि में क्षुल्लक जी के साथ क्षेत्रीय मंत्री श्री पवन जी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सुधासागर जी द्वारा पास किये नक्शे के आधार पर कार्य में कोई बाधा नहीं आयेगी । शिखर कार्य के लिये 2 लाख रूपया अनुशंसित थे जो भेज दिये गये हैं ।

सायं 4.30 बजे प्रस्थान कर 5.25 बजे कटक पहुँच कर मंदिर के दर्शन किये । यहाँ पर पदमप्रभ जिनालय में चौबीसी रत्नों की भव्य दर्शन हुए इस मंदिर में कुल 5 वेदियां हैं । कटक मंदिर अध्यक्ष श्री कमलकुमार जी धनावद से मुलाकात हुई । कटक में जैन समाज के 20–25 घर हैं । यहाँ पर 7 कमरे एवं 1 हॉल की धर्मशाला है ।

द्वितीय जिनालय में 411 ईसवी की प्राचीन मूर्तियाँ हैं । एक वेदी पर यहाँ स्वर्ण सिन्हासन पर स्वर्ण प्रतिमा सुषोभित है । श्री कमल कुमार जी धनावद ने दोनों मन्दिरों के दर्शन कराये। 7.45 पर वापस खण्डगिरि धर्मशाला पहुँचकर रात्रि विश्राम किये ।

दिनॉक– 16.01.2015 को प्रातः 7 बजे पूजन प्रक्षालादि किए । गोसलसागर जी के सान्निध्य में पर्वत पर अभिषेक शांतिधारा की बोलियां लगाई गई। उपस्थित उदयपुर राजस्थान के यात्रियों एवं अध्यक्ष महोदय ने बोली लेकर शांतिधारा की । क्षुल्लकजी ने यहाँ का इतिहास बताया ।

सवेरे 10.00 बजे प्रस्थान कर दोपहर 01.00 बजे कोणार्क पहुँच कर सूर्य मंन्दिर गये । वहाँ के गाइड ने बताया कि यह मन्दिर 800 वर्ष प्राचीन है यहाँ जो चक देख रहे हैं वह प्राचीन घडी है जिससे समय ज्ञात होता था। राजा नरगोंडा नरसिंह देव उडीसा के राजा रहे इन्होने यह मन्दिर बनवाया । रानी का नाम भानुमति सिंह था । चकों में लगे एक्सल नहीं होने से घडी सही समय नहीं बतायेगी । यह मन्दिर 12 एकड में, 12 साल में, 1200 कारीगरों द्वारा बनाया गया है । इस मन्दिर में कुल 24 चक हैं । किवदंती है कि प्रमुख कारीगर के 12 वर्ष के लडके ने इस मन्दिर पर कलश लगाया जिस कारण उसे समुद्र में गिरा दिया कारण कि प्रधान कारीगर यह कलश नहीं लगा पाया था ।

कोणार्क मन्दिर से समुद्री सतह का आनंद लेते हुए जगन्नाथपुरी के मंदिर जाकर वहाँ जैन मूर्ति के दर्शन किए । रात्रि 8.30 बजे खण्डगिरि वापस आ गये । श्री

कन्हैयालाल जी सेठी रात्रि में ही वापस मधुबन के लि चले गये ।

दिनाँक 17.01.2015 सुबह 04.00 बजे खण्डगिरि से वापस डुबुरी, कोन्झर, चाईवासा, चाण्डिल, पुरूलिया, चास होते हुए धनबाद आये । धनबाद मन्दिर के दर्शन किये । वहाँ उपस्थित जैन समाज के श्री मनीष जी झांझरी एवं श्री आमोद जी जैन आदि कार्यकर्ताओं से मुलाकात हुई श्री सम्मेदशिखर तीर्थ विकास के बारे में विचारणा हुई । उपस्थित लोगों के साथ ही रेलवे स्टेशन आये एवं सायं 05.45 पर शक्तिपुंज एक्सप्रेस से अध्यक्ष महोदय कटनी के लिए प्रस्थान कर गये ।

देवेन्द्र कुमार जैन
मधुबन

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया । अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

शिखरजी से खण्डगिरि की यात्रा के दृश्य

पुरुलिया में भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर

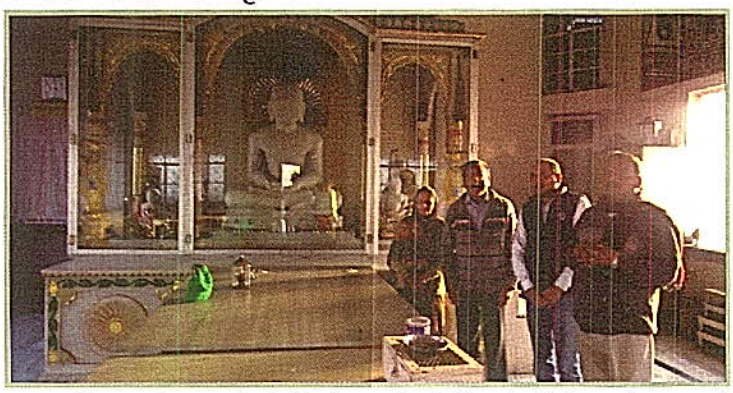

धनबाद में समाज के युवा कार्यकर्ता श्री मनीष झाझरी एवं श्री आमोद जी जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ

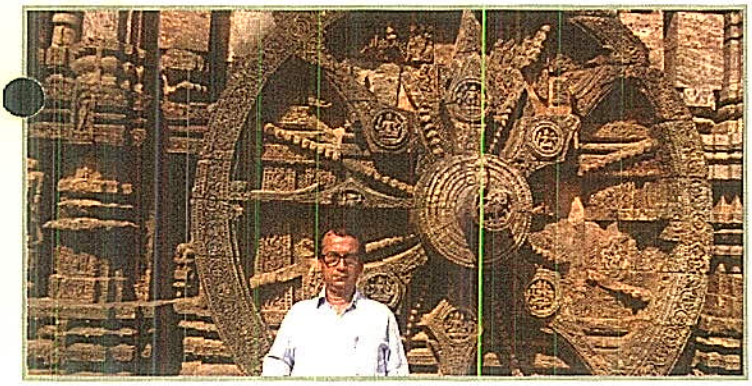

कोणार्क मंदिर

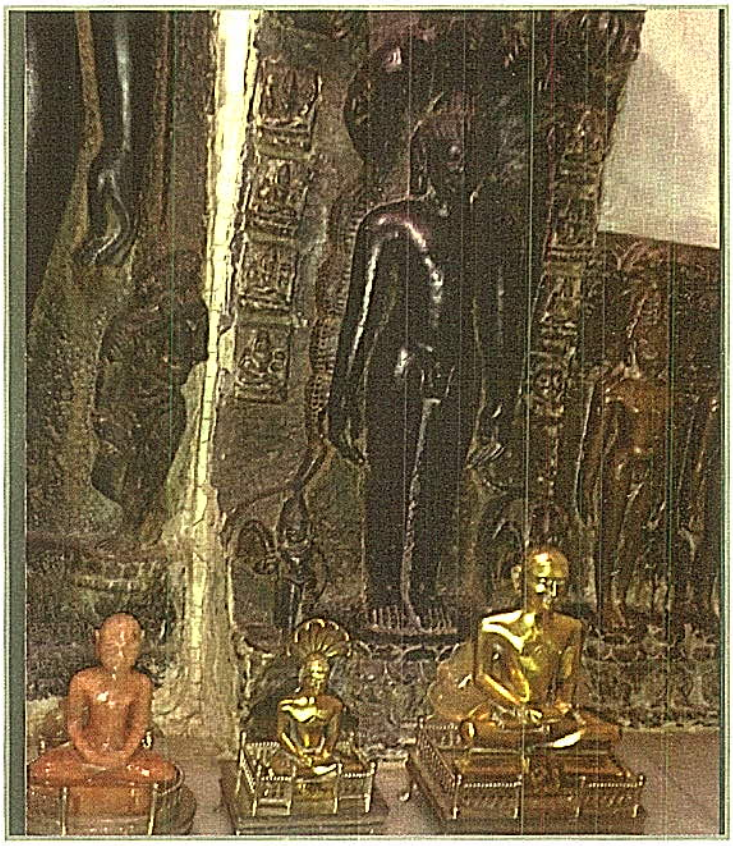

पाकबीरा में भगवान पारसनाथ की वेदी

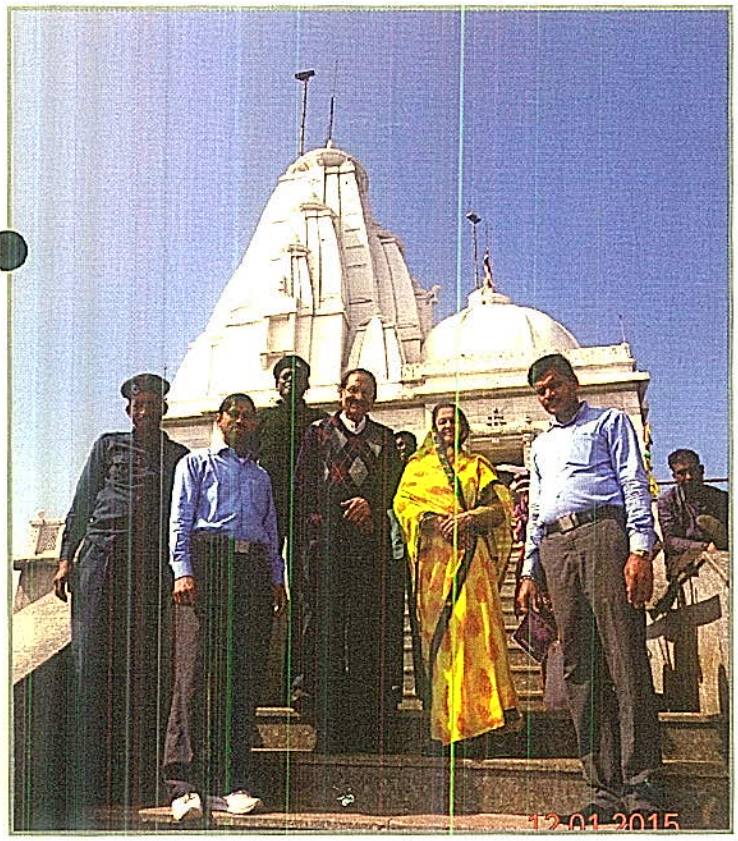

पारसनाथ टोंक

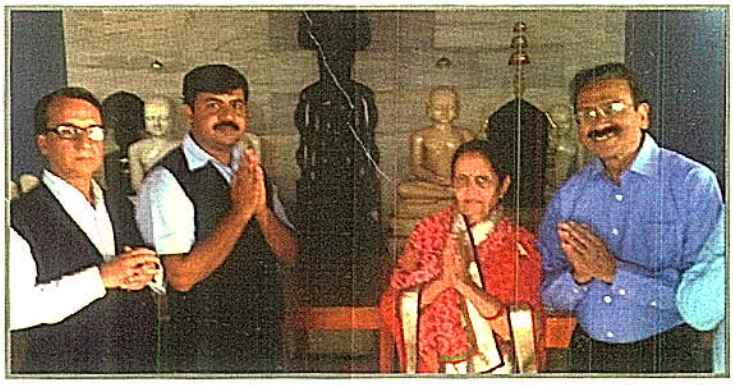

पाकबीरा में भगवान पारसनाथ के दर्शन करते हुए रा. अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, श्रीमती नीलम जैन श्री प्रभात सेठी एवं श्री मनीश जैन ब्रम्हचारी

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

तीर्थंकर श्री शीतलनाथ की चतुःकल्याणक भूमि : विदिशा

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
एल 65, न्यू इन्दिरानगर,बुरहानपुर (म.प्र.)

शीतलधाम : तीर्थंकर श्री शीतलनाथ समवशरण की रचना–

सन् 2002 में जैनधर्म के दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के गर्भ, जन्म, तप (दीक्षा) एवं ज्ञान कल्याणक से पवित्र विदिशा की धर्मधरा पर इस युग के महान् संत, वर्तमान के वरिष्ठतम आचार्य, संतशिरोमणि श्री विद्यासागर जी महाराज का ससंघ आगमन हुआ; जिससे इस धर्मधरा की पवित्रता एक बार पुनः जागृत हो उठी। विदिशा सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष की जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री से निवेदन किया कि गुरुवर! तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के चार–चार कल्याणकों से पवित्र इस भूमि पर विशाल समवशरण की रचना होना चाहिए ताकि हम सबका सौभाग्य जगे, पुण्य की प्राप्ति का अवसर मिले और पुराण तथा इतिहास ग्रंथों में प्रतिपादित इस भद्रपुर/भद्दिलपुर (विदिशा) का इतिहास जीवन्त हो उठे। पूज्य गुरुवर का सहर्ष शुभाशीष को मिला और तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् का विशाल समवशरण यहाँ बनाने का निश्चय किया गया। आचार्य श्री ने यहाँ बनने वाले समवशरण की धरा का नामकरण तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के चार कल्याणकों से जुड़े होने के कारण 'शीतलधाम' रखा। तब से अब तक इस स्थान की प्रसिद्धि विश्वव्यापी हो चुकी है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो साक्षात् तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् का काल लौट आया हो।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का सन् 2008 में महावीर जयंती पर पुनः ससंघ विदिशा आगमन हुआ और नगर में स्थित अरिहंत विहार कॉलोनी के नवनिर्मित जिनालय का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य श्री के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। पुनः सन् 2014 में आचार्य श्री का ससंघ चातुर्मास शीतलधाम–विदिशा में अतिशय धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ तथा पाषाण से बनने वाले तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के समवशरण के साथ–साथ सहस्रकूट जिनालय बनाने का भी निर्णय लिया गया। इस तरह एक प्राचीन तीर्थ नए परिवेश के साथ उभरकर सामने आ रहा है। हम सबको इस तीर्थ संरचना एवं विकास का भरपूर समर्थन एवं सहयोग करना चाहिए।

विरोध क्यों ?

श्वेताम्बर जैन पत्रिका 'स्थूलिभद्र संदेश' के सम्पादकीय में सम्पादक श्री ललित नाहटा ने भद्दिलपुर तीर्थ विदिशा में होने का खण्डन किया है। उक्त पत्रिका की सूचनानुसार–"श्री 'जैन श्वेताम्बर कल्याणक तीर्थ न्यास' के तत्वावधान में 150 वर्ष पूर्व विच्छेदित तीर्थ 'श्री भद्दिलपुर तीर्थ' की पुनर्स्थापना गांव भोंदल, डाकघर हन्टरगंज, जिला चतरा, राज्य झारखण्ड में 10वें तीर्थंकर परमात्मा श्री शीतलनाथ जी की प्रतिमा की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के साथ बड़े आनन्द उल्लास के साथ 12 मई 2014 को आध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागर जी म.सा. आदि साधु–साध्वी ठाणा–19 की निश्रा में हुई।"

उन्होंने उक्त टिप्पणी के साथ 'विदिशा (म.प्र.) कल्याणक तीर्थ नहीं' सम्पादकीय–1 लिखा है और अपने कुतर्क रखे हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि–

1. उन्हें कैसे विदित हुआ कि वे जिस स्थान का तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् की कल्याणक भूमि बता रहे हैं वह 150वर्ष पूर्व विच्छेदित तीर्थ है?

2. सन् 2002 में जब विदिशा को भद्दिलपुर तीर्थ मानकर वहाँ तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् का समवशरण एवं शीतलधाम बनाने का निश्चय किया गया था और सभी पत्र–पत्रिकाओं में इसके समाचार प्रकाशित हुए थे, तब से लेकर सन् 2014 अर्थात् बारह वर्षों में उन्हें याद क्यों नहीं आया कि 'विदिशा (म.प्र.) कल्याणक तीर्थ नहीं' है?

3. श्री ललित नाहटा ने विदिशा को भद्दिलपुर बताये जाने के हमारे आधारों, संदर्भों का तो खण्डन किया है किन्तु उनके द्वारा गांव भोंदल को भद्दिलपुर मानने के पीछे कोई आधार या संदर्भ नहीं दिये हैं, आखिर क्यों?

इससे तो यही सिद्ध हो रहा है कि आपके कोई तर्क या आधार नहीं है। मात्र धनबल के सहारे आप नया तीर्थ खड़ा कर रहे हैं और उसे तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के कल्याणक भूमि के नाम से जोड़ रहे हैं। जबकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् की चार कल्याणक भूमि भद्दिलपुर विदिशा ही है।

आज भी हमारा आपसे और विद्वानों से आग्रह है कि उनके पास तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के चार कल्याणक भूमि से संबंधित कोई प्रमाण हों तो उन्हें सामने लाएं। हम किसी भी सार्थक शोध का स्वागत करेंगे। यदि आपके पास गांव भोंदल को भद्दिलपुर सिद्ध करने के लिए कोई शास्त्रीय, पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक प्रमाण नहीं हैं तो अपनी श्री भद्दिलपुर तीर्थ योजना को निरस्त कर भद्दिलपुर–विदिशा को तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् की चार कल्याणक भूमि मानकर पुण्यार्जन करें।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

भारत सरकार द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक सदस्य राजर्षि डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े को पद्मविभूषण से सम्मानित किये जाने की घोषणा

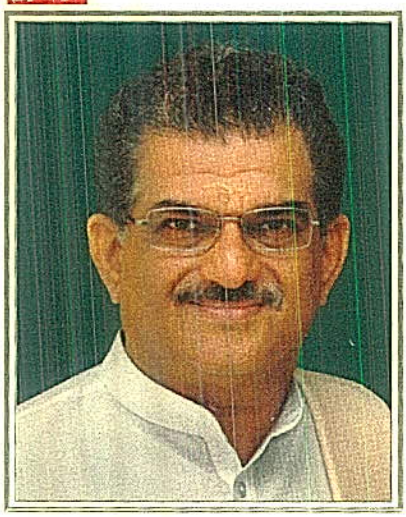

धर्माधिकारी डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े

Renowned Jain personality respected Dr. Virendra Heggade, head of Shrikshetra Dharmsthala (Karnataka) has been honored by including his name for PADMAVIBHUSHAN award for 2015 announced by the Government of India.

He is a great Social worker, reformer, educationist, religious personality. Dr. Virendra Heggade got 'PADMABHUSHANA' Award from Government of India by Shri K.R.Narayanan, the then President of India in 2000. 'RAJARSHI' title from the then President of India, Dr. Shankar Dayal Sharma during the Silver Jubilee of Pattabhisheka in 1993

- The Son of Shri Ratnavarma Heggade and Smt. Ratnamma was born on 25th November, 1948
- The mantle of Heggadeship fell on his young shoulder at tender age of 20, on 24th October, 1968.
- In 1972, he married Smt. Hemavati

Religious activities

- In 1997 organized state level 'Dharma Jagruti Sammelana' at Bangalore in which religious heads of all the religions participated.
- In 1982, he installed 39 feet tall Bagawan Bahubali at Dharmasthal and successfully organized Mahamastakabhisheka in 1982, 1995, and 2007.
- In 1990 he founded 'Shri Dharmastala Manjunatheswar Dharmotthan Trust' to restore and renovate ancient temples. As on date more than 195 temples have been restored.

Cultural contribution

- Every year Sarva Dharma Sammelana and Kannada Sahitya Sammelana held at Dharmastal.
- About 4.0 lakh students and 4000 teachers are trained in Yoga and moral education every year.
- Encouraging 'Yakshagana', an ancient dance form of Dakshina Kannada region among the youths.
- Established "Manjusha" Museum in 1989
- Established Manjunatheshwar Cultural Research Centre. More than 5000 palm leaves inscription, manuscripts and other ancient literature have been preserved in this centre.

Social Contribution

Mass Marriage Programme: Conducted Mass marriage programme. 11657 marriages have been conducted since 1972. Constructed several Kalyana Mantapas.

Positions

- President of Manjunatheshwar Education Trust and Dharmasthala Manjunatheshwar Education Society, Ujire, Karnataka
- President of Shri Dharmasthala Manjunatheshwar Dhamromtthan Trust, Dharmasthala, Karnataka
- Shri Dharmasthala Medical Trust, Dharmasthala.
- Shantivana Trust, Dharmasthala

Membership

National Foundation for Communal Harmony

Educational Contributions

Schools

- SDM English Medium School (State&CBSE),Dharmasthala, Ujire, Belthangady
- SDM Higher.Primary. School, Dharmasthala , Ujire, Puduvettu, Mayyadi, Kanchana
- SDM High School Dharmasthala , Ujire, Perinje , Belal, Kanchana
- SDM Mangalajyothi Integrated School, Vamanjur - Hearing impaired children and autism. (Physically and Mentally Challenged)

PU Colleges

- SDM Residential, PU College Ujire and J.S.S Dharwad
- SDM Girls PU College, Mysore

Diploma / ITI

- SDM Technical Institute (Polytechnic), Ujire.
- SDM Industrial Training Centre, Venur, Samse, Dharwad.
- S.D.M. college of Arts, Commerce and Science, Ujire (Autonomous).
- S.D.M Law College, Mangalore and J.S.S Sakri Law College Hubli.
- S.D.M. College of Ayurveda and Hospital Udupi and Hassan.
- S.D.M College of Engineering and Technology, Dharwad & Ujire.
- S.D.M College of Dental Sciences and Hospital, Dharwad.
- S.D.M. Cranio Facial Hospital, Dharwad.
- S.D.M College of Naturopathy and Yogic Sciences, Ujire.
- S.D.M. Medical College and Hospital, Dharwad.
- S.D.M. College of Physiotherapy Dharwad.
- JSS K.H Kabbur Institute of Engineering, Dharwad.
- S.D.M Institute for Management Development, Mysore.

OTHER INSTITUTIONS

- Yakshagana Training Centre, Dharmasthala.
- Middle Level Training Centre (M.L.T.C.) for Anganawadi Supervisors, Ujire (Sponsored by National Institute of Public Co-operation and Child Development, New Delhi.)
- Manjushree Printers, Ujire.
- Nethravathi Fine Arts Training Centre, Ujire.

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार उन्हें हार्दिक बधाई देता है।

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती । वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी के भवन निर्माण हेतु शिलान्यास समारोह विधि–विधान पूर्वक सम्पन्न

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी के भवन निर्माण के लिए जयपुर स्थित मालवीय नगर संस्थानिक क्षेत्र में करीब 3000 वर्गमीटर भूमि रियायती दर पर राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई थी । इस भूमि पर शिलान्यास समारोह दिनांक 17 जनवरी, 2015 को पूर्ण विधि–विधान के साथ सम्पन्न हुआ ।

समारोह में सबसे पहले सुश्री प्रीति जैन, उपनिदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा अपभ्रंश भाषा में मंगलाचरण किया गया । तत्पश्चात् दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के अध्यक्ष माननीय न्यायाधिपति श्री नरेन्द्रमोहन जी कासलीवाल जो कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी रहे हैं, ने सभी आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया ।

शिलान्यासकर्ता न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्रकुमार जी जैन, पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय तथा पूर्व अध्यक्ष मानवाधिकार आयोग हिमाचल प्रदेश एवं राजस्थान का श्री महावीरजी क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य एवं अपभ्रंश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. कमलचन्द जी सौगानी, उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी पाटनी, अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री नरेन्द्रमोहन जी कासलीवाल एवं मानद मंत्री श्री महेन्द्रकुमार पाटनी द्वारा तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शाल ओढाकर एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

इसके बाद डॉ. कमलचन्द जी सौगानी द्वारा अपभ्रंश साहित्य अकादमी के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की गई। शिलान्यासकर्ता न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्रकुमार जी जैन द्वारा भी इस अपभ्रंश साहित्य अकादमी के भवन निर्माण के कार्य को शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करने में जैन समाज से आर्थिक सहयोग प्रदान करने की अपील की ।

अंत में श्री महावीरजी क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेन्द्रकुमार पाटनी द्वारा समारोह में उपस्थित सभी महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया । मंच संचालन श्रीमती मालती जी जैन द्वारा किया गया ।

तत्पश्चात् पं. निर्मलकुमार जी बोहरा द्वारा पूर्ण विधि–विधान पूर्वक शिलान्यासकर्ता न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्रकुमार जी जैन से शिलान्यास का कार्यकम सम्पन्न करवाया एवं समाज के गणमान्य महानुभावों द्वारा भी रत्न, स्वर्ण, रजत एवं ताम्र शलाखाऐं रखी गई।

इस अवसर पर पं. निर्मलकुमार जी बोहरा का भी श्री महावीरजी क्षेत्र के कोषाध्यक्ष श्री बलभद्रकुमार जी जैन, संयुक्त मंत्री श्री हेमन्त जी सौगानी, उपाध्यक्ष श्री सुधाशुं जी कासलीवाल, पूर्व अध्यक्ष श्री नरेशकुमार जी सेठी द्वारा तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शाल ओढाकर एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मान किया गया ।

इस अवसर पर उपरोक्त महानुभावों के अलावा श्री महावीरजी क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य श्री राजकुमार जी काला, श्री पूनमचन्द्र जी शाह, सिक्किम उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री नरेन्द्रकुमार जी जै श्री सुभाष जी जैन, श्री सतीश जी अजमेरा, श्री सुधीर जा कासलीवाल एवं श्री सी.पी. जैन साहब सहित श्री अशोक जी नेता, रत्न व्यवसायी श्री विवेक जी काला, डॉ. महेन्द्रकुमार जी पाटनी, श्री आई.सी. सौगानी, मालवीय नगर दिगम्बर जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री सी. एल. जैन, श्री उत्तमकुमार जी पांड्या, श्री यू.सी. जैन, वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रवीणचन्द्र जी छाबडा, श्री राजेन्द्रकुमार जी ठोलिया, दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमार जी पांड्या, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द जी तिजारिया, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप राजस्थान के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमार जी पाटनी, दिगम्बर जैन समाज बापूनगर संभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रकुमार जी जैन, दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय के अध्यक्ष श्री ताराचन्द जी जैन आदि सहित सैंकडों की संख्या में समाज के गणमान्य लोग भी उपस्थित थे और सभी ने कार्यकम सम्पन्न करवाने में अपना सहयोग प्रदान किया ।

– महेन्द्रकुमार पाटनी, मानद मंत्री

एलाचार्य अतिवीर जी द्वारा ज्ञानवर्धक शीतकालीन वाचना सम्पन्न

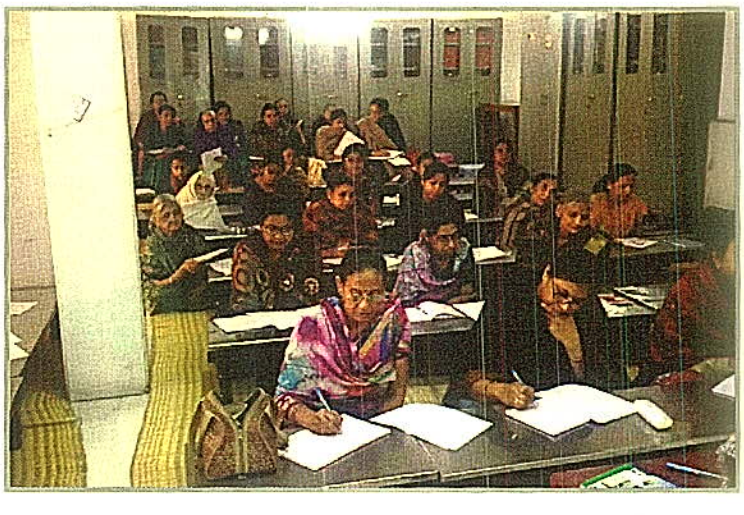

त्रिलोक तीर्थ प्रणेता पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य गुरुवर आचार्यश्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागरजी महाराज के शिष्य परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के परम पावन सान्निध्य में राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी अशोक विहार फेज-1 में व्यापक धर्म एवं ज्ञान प्रभावना सम्पन्न हुई। प्रतिदिन यहाँ प्रातःकाल में आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी महाराज कृत श्री पुरुषार्थ देशना पर एलाचार्य श्री द्वारा सारगर्भित विवेचन प्रदान किया गया। भीषण जाड़े में भी श्रद्धालुजन प्रातः 5.45 बजे ही शास्त्र श्रवण के लिए पहुंच जाते थे। तत्पश्चात एलाचार्यश्री के सान्निध्य में जिनभिषेक एवं शांति-धारा से वातावरण धर्ममय हो जाता था। प्रतिदिन की मार्मिक विवेचना में एलाचार्य श्री ने समस्त समाज को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु प्रेरित किया। सम्यग्दर्शन की व्याख्या करते हुए पूज्य एलाचार्यश्री ने कहा कि मोक्ष मार्ग पर बढ़ने के लिए सम्यग्दर्शन ही प्रथम सीढ़ी है। इसके बिना समस्त धार्मिक क्रियाएँ निरर्थक एवं निष्फल हैं। एलाचार्यश्री ने आगे कहा कि वीतरागी प्रभु के वचनों पर दृढ़ श्रद्धान करने से ही सम्यग्दर्शन सुदृढ़ होता है।

प्रातः 8.00 बजे से श्री भक्तामर स्तोत्र पर विशेष शिक्षण कक्षा का आयोजन हुआ जिसमें दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से धर्मानुरागी बंधुओं ने सम्मिलित होकर धर्मार्जन किया। इस कक्षा में एलाचार्यश्री ने सर्वप्रथम श्री भक्तामर जी के महात्म्य, तिलका छंद, आचार्य मानतुंग जी के भाव आदि के साथ-साथ संस्कृत व्याकरण संबंधी नियमों का गहन पाठन करवाया। शुद्ध उच्चारण हेतु एलाचार्य श्री ने स्वराघात विधि, दीर्घ-ह्रस्व स्वर, संधि आदि के बहुत ही उपयोगी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। विद्यालय के अध्यापक की भांति एलाचार्यश्री ने भक्तामर जी के प्रत्येक काव्य को ब्लैक-बोर्ड पर लिख कर समझाया जिससे सभी के अनसुलझी गुत्थियां सुलझ गयी। प्रत्येक काव्य का शुद्ध उच्चारण तथा भावार्थ सभी विद्यार्थियों को अब सहज ही समझ आने लगा था।

शीतकालीन वाचना के प्रथम अध्याय में आयोजित अष्टाह्निका पर्व के प्रसंग पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान के साथ आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी विरचित श्री रयणसार ग्रंथराज की विवेचना सायंकाल में प्रारम्भ हुई थी। श्रमण एवं श्रावक की चर्या संबंधी नियमों का तर्क-सम्मत एवं स्पष्ट पाठन एलाचार्य श्री ने इस कक्षा के माध्यम से किया। यह प्रथम अवसर था जब अशोक विहार क्षेत्र में गुरु-मुख से किसी ग्रंथ का स्वाध्याय सम्पन्न हुआ हो। इस विशेष अवसर पर दिनांक 21 दिसम्बर, 2014 को श्री भक्तामर विधान का भव्य आयोजन किया गया। विधान की विशेषता रही कि विधानाचार्य एवं संगीतकार होते हुए भी सभी बंधुओं ने भक्तामर जी के काव्यों का स्वयं ही शुद्ध उच्चारण किया जिससे एक अलग ही माहौल निर्मित हुआ। रयणसार जी के निर्विघ्न समापन के पश्चात आचार्यश्री विशुद्ध सागरजी महाराज कृत श्री स्वरूप संबोधन का स्वाध्याय प्रारम्भ हुआ।

लगभग तीन माह के प्रवास से एलाचार्य श्री के सान्निध्य में यहाँ ज्ञान की गंगा अविरल बहती रही। शीतकालीन वाचना समापन के अवसर पर दिनांक 18 जनवरी, 2015 को श्री भक्तामर विधान का भव्य आयोजन हुआ। तत्पश्चात 10 घंटे के लिए श्री भक्तामर जी का संगीतमय अखण्ड पाठ किया गया। इस अवसरपर समस्त समाज के लिए प्रातःकालीन नाश्ता, दोपहर एवं सायंकाल में स्वादिष्ट भोजन तथा रात्रि में केसरिया दूध की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। प्रथम तीर्थेश श्री 1008 आदिनाथ भगवान के निर्वाण कल्याणक दिवस के पुनीत उपलक्ष्य पर जिनभिषेक, शांति धारा एवं नित्य-नियम पूजन के पश्चात निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। स्वाध्याय कक्षाओं में सम्मिलित हुए समस्त ज्ञान-पिपासुओं को समाज के दानी महानुभावों द्वारा विशेष उपहार प्रदान किये गये। इस दरम्यान एलाचार्य श्री का अशोक विहार क्षेत्र में पधारे अनेक दिगम्बर एवं श्वेताम्बर संतों से मंगल वात्सल्य मिलन हुआ, जिससे समाज में संगठन एवं एकता का संदेश प्रसारित हुआ।

- समीर जैन, दिल्ली

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

जैन धर्म परिचय

भारतवर्ष के प्राचीन धर्मों में से एक है हमारा जैनधर्म। आजकल भौतिकवादी युग में लोगों का भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में पूरा समय ही निकल जाता है। वह आने वाली पीढ़ी को धर्म से परिचित ही नहीं करा पा रहे हैं। न ही सिद्धांतों से और न आचारों से जिससे समाज में धर्म की गौरवशाली परम्परा की गंगा के प्रवाह में शिथिलता आ गयी है। नयी पीढ़ी ही हमारे धर्म सिद्धांतों और आचारों को आगे ले जाने का कार्य करती है।

अगर यह गंगा इसी तरह शिथिल होती गयी तो भविष्य में वह दिन दूर नहीं जब हम भौतिक संसाधनों से तो सम्पन्न होंगे, लेकिन संस्कारविहीन हो जाएंगे। हमारे शास्त्र कहते हैं कि 'मानव संस्कारों से ही मानव कहलाता है नहीं तो वह सींग और पूंछ विहीन पशु ही है।' इस शास्त्रोक्त वचन का पालन करने के लिए जरूरी है हमारी आने वाली पीढ़ी और वर्तमान पीढ़ी भी धर्म से परिचित रहे। तभी हम देश और समाज को एक अच्छा नागरिक दे सकते हैं।

वर्तमान समाज तक जैन धर्म के सिद्धांतों, आचारों एवं परम्पराओं को पूर्णतः परिनिष्ठित कर एक पुस्तक के रूप में भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली ने प्रो. वृषभ प्रसाद जैन के निर्देशन में भारत में जैन धर्म के श्रेष्ठ विद्वानों के साथ गम्भीर विचार-विमर्श किया। उसके बाद जो निष्कर्षतः ज्ञानरूपी मणि निकली उसको एक पुस्तक का आकार दिया। जिसका नाम है - जैनधर्म परिचय। (मूल्य ५०० रुपये पर ४० प्रतिशत छूट के साथ)

इस पुस्तक के विषय में उन विद्वानों ने एक मत होकर यह बात कही कि यह पुस्तक जैनधर्म के सभी सिद्धांतों, आचारों एवं परम्पराओं का सार तत्व है। यह पुस्तक जैनधर्म में दीक्षित छात्रों, शोधार्थियों के तो उपयोगी है ही साथ ही इसको प्रत्येक मंदिर एवं जैन परिवार में होना चाहिए। ताकि प्रत्येक जैन अनुयायी इन सिद्धांतों से परिचित हो सके और नयी पीढ़ी संस्कार से युक्त हो सकेगी।

विद्वानों का मानना है कि यदि ये पुस्तक प्रत्येक जैन परिवार में रहेगी तो परिवार का प्रत्येक सदस्य जो आज मंदिर तक नहीं पहुंच पा रहा है वह घर में जब वक्त मिलेगा वह इसको पढ़कर धर्म के रीति-रिवाजों से परिचय तो हो सकेगा।

इस पुस्तक का प्रारम्भ जैनधर्म के इतिहास एवं संस्कृति के पक्ष से होता है जिसमें पाठक को जैन इतिहास, ईश्वर संबंधी जैन अवधारणा, तीर्थंकर परम्परा जिनागम, जैन यात्रा साहित्य एवं जैन तीर्थों का सारगर्भित वर्णन है। फिर धर्म-दर्शन यह पक्ष जैनधर्म के सिद्धांतों का परिचय देता है जैसे- तत्त्वमीमांसा, अनेकांतवाद, स्याद्वाद और जैनन्याय आदि। जैनधर्म के आचारों से परिचित करते हुए हमारे विद्वानों ने जैन आचार मीमांसा श्रावकाचार प्रतिष्ठा विधि, व्रत एवं साहित्य आदि कई पहलुओं को गणित, भूगोल, जैनों में भाषा चिंतन, कोशपरम्परा और ज्योतिष जैसे कई विषय जिनका जैनधर्म में विस्तार से वर्णन मिलता है। यह तो सर्व विदित है कि मूर्ति पूजा की शुरुआत सबसे पहले जैन धर्म से हुई थी वहीं से जैन कला एवं स्थापत्य का विकास हुआ उसमें प्रतीक दर्शन, मूर्तिकला, संगीत एवं वास्तु प्रमुख है। जैनधर्म केवल भारतवर्ष में ही नहीं फला-फूला बल्कि इसने अपनी वैश्विक पहचान बनायी। विश्व के लगभग सभी देशों में जैनधर्म के अनुयायी रह रहे हैं चाहे वह अफ्रीका, यूरोप, सिंगापुर और अमेरिका हो। वहाँ रहकर भी वे जैनधर्म के सभी आचारों का पालन कर रहे हैं। अब बात आती है समृद्धि साहित्य एवं साहित्यिक परम्पराओं की। जैन साहित्य प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, कन्नड़, तमिल, मराठी और हिन्दी में लिखा गया। आज भी लगभग सभी भाषाओं में जैन साहित्य लिखा जा रहा है। अंग्रेजी भाषा में भी जैनसाहित्य प्रमुखता रूप रहा है जिससे जैनधर्म की वैश्विक पहचान बन रही है।

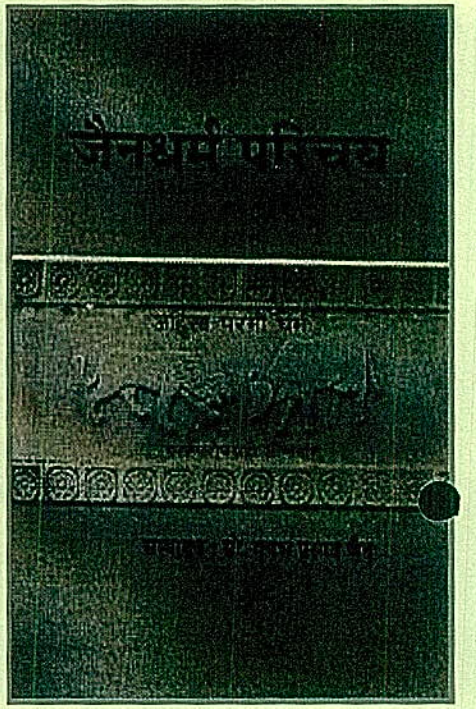

इस तरह यह ग्रन्थ जैनधर्म के सभी पक्षों से पाठकों को परिचित करता है। ज्ञानपीठ यह आशा करता है कि यह पुस्तक प्रत्येक जैन अनुयायी द्वारा क्रय की जाएगी। ताकि इस पुस्तक में जो ज्ञानमणि है उससे जैन समाज लाभान्वित हो सके

इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए संपर्क करें :- भारतीय ज्ञानपीठ, १८ इस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली- ११० ००३, फोन : (०११) २५६५४१९५, २४६५४१९६, विक्रय अधिकारी मो. ०९३५०५३६०२०.

श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद के चुनाव में राजेन्द्र के. गोधा अध्यक्ष व श्री उमरावमलजी संघी मंत्री निर्वाचित

राजेन्द्र के. गोधा

उमरावमल संघी

जयपुर, दिनांक 4 जनवरी, 2015 को श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद के चुनावों में अध्यक्ष पद पर तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा निर्वाचित हुए। श्री उमरावमलजी संघी मंत्री एवं श्री सुनील बख्शी कोषाध्यक्ष चुने गये। इनके अलावा 6 कार्यकारिणी सदस्यों में श्री मुकुल कटारिया, महेशचन्द काला, प्रमोद कुमार पाटनी, कमल बाबू जैन, अशोक जैन नेता एवं श्री अखिलेश कुमार जैन निर्वाचित हुए। श्री कमल बाबू जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के महामंत्री भी हैं। दिनांक 12/1/2015 को दो सदस्यों का सहवरण किया गया जिनमें क्रमशः श्री ज्ञानचन्दजी झांझरी व श्री राकेश जैन को लिया गया। विधानुसार इसी सभा में श्री अखिलेश जैन को उपाध्यक्ष एवं श्री महेश काला को संयुक्त मंत्री पद पर मनोनीत किया गया।

सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से हार्दिक बधाई।

- नरेन्द्र पाण्ड्या (मंत्री), जयपुर

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

प्रतिष्ठाचार्य पं० गुलाब चन्द पुष्प, टीकमगढ, म.प्र. का स्वर्गवास

बीसवीं शताब्दी के दिगम्बर जैन प्रतिष्ठाचार्यों की सूची में अग्रगण्य स्वनामधन्य पंडित श्री गुलाब चन्द 'पुष्प' ने आषाढ़ शुक्ला 8 विक्रम संवत् 1981 को म० प्र० के टीकमगढ जनपद के ककरवाहा ग्राम की भूमि में जन्म लिया। पूज्य पिता जी पं० मन्नूलाल जी अपने समय के प्रतिष्ठित पंडित जी थे। और जब पुष्प जी के बेटे जय निशान्त इस क्षेत्र में आये तो तीन पीढ़ियों का धर्म की प्रभावना में दुर्लभ संजोग बन पड़ा।

'सादा जीवन उच्च विचार' के धनी पुष्प जी का सम्पूर्ण जीवन धर्म एंव संस्कृति के प्रति समर्पित रहा। पुष्प जी की कीर्ति एंव प्रतिष्ठा में उनकी धर्म साधना और आगम सिद्धातों के प्रति निष्ठा प्रमुख तत्व रहे। अनेक बार परिस्थितियां विपरीत रहीं पर उस विपरीतता में तपकर उनका व्यक्तित्व निखरता ही चला गया। पुष्पजी की स्वाभिमानता उनकी अपनी विशिष्ट पहचान थी जिसे जीवन भर उन्होंने कायम रखा। अपने अनुभवों की पूँजी और अपने सदगुणों के बलबूते पर वह उच्च शिखर पर पहुंचे। समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति तक उनकी पहुँच थी यही कारण है कि आम लोगों से उनका जुडाव सदैव बना रहा एक वैद्य के रुप मे अनेक सफल नुस्खों का उनके पास खजाना था स्वयं पथ्य–अपथ्य का विचार करते थे और दूसरों को भी समझाते थे। उनकी आहार चर्या संतुलित, मर्यादित एंव सादगी पूर्ण थी।

आपने शताधिक पंचकल्याणक महापूजायें, वेदी प्रतिष्ठायें, विधान, शिलान्यास, व्रत–अनुष्ठान पं० पुष्प जी द्वारा कराये गये। देव शास्त्र गुरु पर पूर्ण श्रद्धान रखते हुए आडम्बर से रहित पूजा विधान कराते थे। आगम के विपरीत शब्दों को न सुनते थे न बोलते थे। माता पिता से प्राप्त चारित्रिक और धार्मिक संस्कारो को अपनी सतत साधना और अनुभव से दृढ किया।

पं० पुष्प जी ने अनेक ग्रन्थों का सश्जन कर माँ जिनवाणी के भण्डार को समृद्ध किया। 'प्रतिष्ठा–रत्नाकार' ग्रन्थ का सृजन/संकलन कर भावी प्रतिष्ठाचार्यों, विधानाचार्यों, पंडित वर्ग को मार्ग दिखाया इस ग्रन्थ में पंचकल्याणक से लेकर सभी विधानों आदि की क्रियाओं का उल्लेख है जैन धर्म एंव संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में उनके इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

अपने पूज्य पिताजी पं० मन्नूलाल जी की स्मृति में ककरवाहा में हाईस्कूल की स्थापना की। अनेक संस्थाओं को आप समय–समय पर सहयोग देते रहे। साधनहीन विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सहायता प्रदान करते थे। अ० भा० दि० जैन शास्त्री परिषद में प्रत्येक वर्ष एक विद्वान को उनके पूज्य पिता श्री मन्नूलाल जी के नाम से सम्मानित किया जाता है।

हजारों लाखों लागों की श्रद्धा के केन्द्र बने पं० पुष्प जी का समाज ने अनेक अवसरों पर सम्मान कर गौरव बढाया धर्मानुरागी, संहितासूरि, वाणीभूषण, प्रतिष्ठादिवाकर, सम्यक्त्वपथिक, पण्डित–रत्न, तीर्थभक्त प्रतिष्ठा तिलक व्याख्यान वाचस्पति, लौह पुरूष, विद्वत्रत्न, प्रतिष्ठा ज्योतिर्विद, धर्मदिवाकर आदि उपाधियों से आप अलंकृत थे।

जीवन के अन्तिम समय समस्त मोहों, समस्त परिग्रहों का त्याग कर संयमपूर्वक साधना से अपने नश्वर देह का त्याग किया। पं0 जी का जाना एक सफल प्रतिष्ठाचार्य का जाना ही नहीं अपितु एक आगमनिष्ठ विद्वान और सहृदय इंसान का जाना भी है । ऐसे श्रद्धेय पं० पुष्प जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

डॉ० कपूर चन्द जैन

श्रीमती निर्मल देवी जी पाटनी का जयपुर में निधन

धर्मपरायण एवं बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी श्रीमती निर्मलादेवी जी पाटनी धर्मपत्नी श्री दीनदयालजी जैन पाटनी का दिनांक 5/1/2015 को जयपुर में निधन हो गया। स्व.श्रीमती निर्मलादेवी जी पाटनी तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा की अनुजा प्रिय बहिन थी। दिनांक 8/1/2015 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर सेठी कॉलोनी पर श्रद्धांजलि सभा में भारी तादाद में उपस्थित होकर भगवान शांतिनाथ से दिवंगत आत्मा की चिरस्थायी एवं सद्गति के लिए कामना की व उनके परिवारजन को इस दुःख की घड़ी में धैर्य धारण की शक्ति दे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के सभी पदाधिकारी व सदस्य उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

तीर्थयात्रा - नवजीवन में प्रवेश

- डॉ. नीलम जैन

तीर्थस्थलों से विभूषित भारत भूमि स्थान-स्थान पर प्राचीन मंदिरों से, तीर्थंकरों, ऋषि, मुनियों की पावन रज से, उनके जन्म, तप, निर्वाण से महिमा मण्डित है। इन पावन भूमियों की दिव्यता का आनन्द और ऐसे रम्य व भव्य स्थलों को पुराणकारों ने अपने आख्यानों और उपाख्यानों में निबद्ध किया वहीं आस्था और आस्तिकता सम्पन्न कोटि कोटि देश विदेश में रहने वाले उनके दर्शन कर और उस पावन रज को अपने मस्तक से स्पर्श कर स्वयं को धन्य करते हैं।

तीर्थ यात्रा पर्यटन नहीं है हाँ प्रकारात्तर से पर्यटन का आध्यात्मीकरण कहा जा सकता है। पर्यटक तलाश करता है प्राकृतिक स्थलों में विलासिता की जबकि तीर्थयात्रा इनकी दिव्यता में समर्पण की। पर्यटक कमनीयता और रमणीयता के मध्य तृप्ति चाहता है तो तीर्थयात्री भव्यता और अभिरामता के बीच मानसिक विश्रांति। पर्यटन में कामनाओं की उद्दीप्ति है जबकि तीर्थयात्रा में मंगल भावनाओं की प्रदीप्ति। पर्यटक प्रकृति में बिखरे अनन्त सौन्दर्य को निरखता है जबकि तीर्थयात्री अपने आराध्य के चरणों में मन-सुमन चढ़ाने को व्याकुल रहता है। नैसर्गिक वैभव से आलोकित ये तीर्थस्थल शत सहस्र वर्षों से सामाजिक समरसता, एकता सांस्कृतिक एवं धार्मिक अखण्डता के कीर्ति स्तम्भ रहे हैं।

सामान्य भ्रमण से व्यक्ति को सुख मिलता है किन्तु तीर्थयात्रा उसे नवीन अंर्तदृष्टि देती है 'तीर्थानां स्मरणं पुण्यं दर्शनं पापनाशनम्' । तीर्थयात्रा से और अनेक स्थलों पर ऊँची ऊँची गिरि पर्वत श्रृंखलाओं पर चढ़कर आराध्य के दर्शन करने से तन-मन की पुरानी कलुष कालिमाएं धुलती हैं विचार चक्र टूटते हैं वह आत्मा के घने और अज्ञात उपवन में प्रवेश करता है। चिंतन, मनन, आराधना पूजा भक्ति से देह और मस्तिष्क की सुसुप्त उर्जा जागृत होकर निर्मल चेतना से भर देती है और यह नव परिवर्तन जीवन में नई उष्मा, नई उर्जा भर देता है। तीर्थयात्रा से मानव जीवन की बहुमूल्यता का अनुभव, एक-एक क्षण की गुणवत्ता के अहसास का अवसर मिलता है। तीर्थ भूमि की सघन शीतल नैसर्गिक निर्म.... । हमारी जीवन को तीर्थ बना देती है, तीर्थ सम बनने को प्रेरित करती है। इस जीवन में पुण्य कर्मों की ओर प्रेरित करती है साथ ही ये तीर्थ हमसे भी अपेक्षा करते हैं । इनकी मौलिकता, विशुद्धता, पवित्रता, दिव्यता को यथावत् रखने की। अतः जब हम तीर्थ यात्रा पर हों तो हमारे साथ हमारे पल-पल का एकाउण्ट भी हो- हमने कितना व्यय किया और कितना प्राप्त किया। सच तीर्थ यात्रा नव जीवन का प्रवेश द्वार है। आइए हम अपने तीर्थों में प्रवेश करें तीर्थयात्री बनकर और लौटें मोक्षमार्गी बनकर।।

कवि कैलाश मड़बैया को शांतिदेवी जैन साहित्य पुरस्कार–2015

झॉसी,वेत्रवती तट स्थित प्रसिद्ध तीर्थ ओरछा में दो दिवसीय राष्ट्रीय बुंदेली साहित्य सम्मेलन में नूतन वर्षाभिनन्दन पर प्रतिष्ठित जैन कवि कैलाश मड़बैया भोपाल को'लाइफ टाइम एचीवमेंण्ट अवार्ड'स्वरुप 51000रु ;इन्कयावन हजार रुपयों द्वका शान्तिदेवी जैन साहित्य राष्ट्रीय पुरस्कार पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य,सांसद झॉसी श्री विश्वनाथ शर्मा पूर्व सम्पादक मध्यदेश, ओरछा नरेश मधुकरशाह दिल्ली और फिल्म अभिनेता राजा बुंदेला के अतिथि मण्डल द्वारा सैकड़ों साहित्यकारो के मध्य,भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर वीरसिंह देव पुरस्कार डॉ. कामिनी दतिया को भी प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री प्रदीप जैन आदित्य की विदुषी माता श्रीमती शांतिदेवी जैन की स्मृति में इन्कयावन हजार रुपयों का उक्त पुरस्कार हर वर्ष देश के एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार को प्रदान किया जाता है। यह बताना यहॉ प्रासंगिक है कि श्री कैलाश मड़बैया के दो दर्जन ग्रंथ तो प्रकाशित हुये ही हैं, उनके द्वारा जैन साहित्य भी प्रचुरता में रचा गया है जिनमें बहुचर्चित बुदेली भक्तामर, बुंदेलखण्ड के जैन तीर्थ, श्रवणबेलगोला पर काव्यॉजंलि, जैन तीर्थ बानपुर पर ऐतिहासिक ग्रंथ–'बुंदेलखण्ड का विस्मृत वैभव–बानपुर'इत्यादि पुस्तकें भी पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हैं। श्री कैलाश

मड़बैया भारत के अलावा अमेरिका, इंगलेंण्ड, जापान, चीन, मारीशस, दुबई, नेपाल आदि अनेक देशों में अपने काव्य पाठ सें भारत का और जैन समाज का नाम दुनिया भर में रोशन कर चुके है। उन्हें देश विदेश के कई ख्यातिप्राप्त पुरस्कार प्राप्त हो चुके है।ओरछा में उनके गंथ 'बुंदेली के ललित निबंध' पर, 60 साहित्यकारों ने समीक्षा आलेख प्रस्तुत किये जो एक राष्ट्रीय रिकार्ड है।

–'प्रकाश'

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

शताब्दि समारोह - वार्षिक समारोह
सन्मतिसागर जैन कन्याशाला समारोह (1915-2015) कटनी (मध्यप्रदेश)

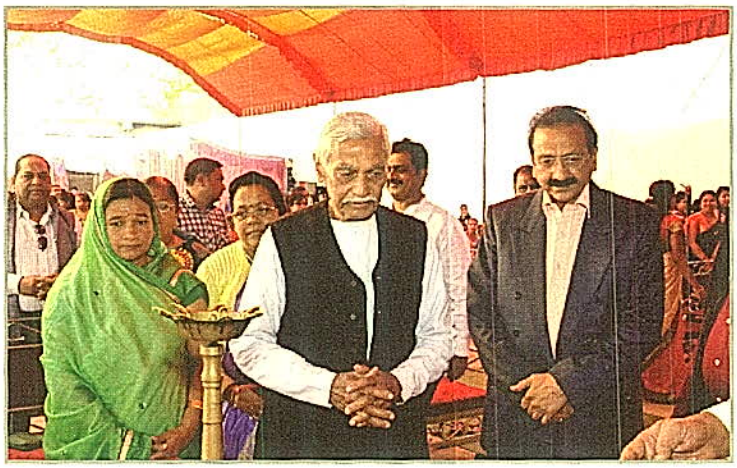

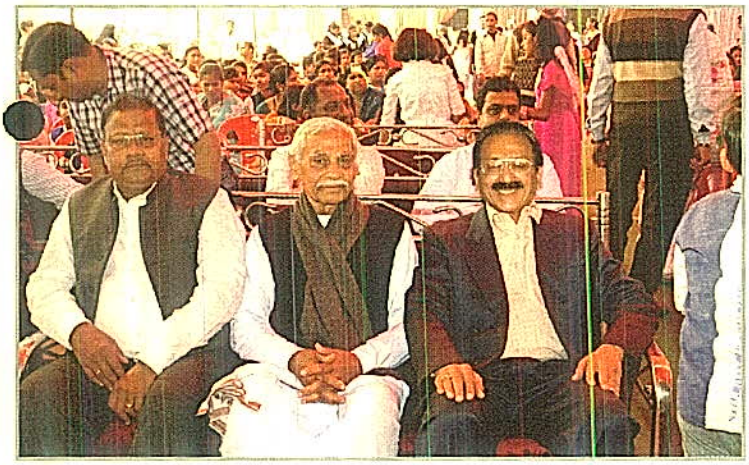

सवाई सिंघई परिवार एवं जैन समाज के अटूट सहयोग से 1915 में स्थापित जैन पाठशाला ट्रस्ट के द्वारा संचालित संस्कृत विद्यालय, छात्रावास, धार्मिक शिक्षण सहित प्राइमरी पाठशाला एवं वर्तमान में माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक शालाओं ने 100 वर्ष पूरे किए। इस शताब्दी समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में सवाई सिंघई परिवार की तीसरी पीढ़ी के सदस्य स.सिं. सुधीर कुमार जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि सराहना करते हुए प्रतिभाशाली छात्राओं एवं छात्रों को विशेष योगदान का आश्वासन दिया। संस्था के अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन एवं महामंत्री श्री राजेन्द्र जैन ने स.सिं. परिवार एवं जैन पाठशाला ट्रस्ट की अनवरत 100 वर्षों की भूमिका के लिए आभार माना।

बालिकाओं के मोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सभी ने इस शताब्दी वर्ष में भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

पुष्पलता पाटणी ने ली जैनेश्वरी दीक्षा

श्री क्षेत्र जटवाड़ा में दीक्षा के पश्चात बनी आर्यिका हेतुश्री माताजी

जटवाड़ा । श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाड़ा में पपू गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी के सान्निध्य में एवं उनके हाथों ब्रह्मचारिणी सप्तमप्रतिमाधारी पुष्पलता पाटणी को आर्यिका दीक्षा दी गई। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में भक्त उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सर्वप्रथम ब्रह्मचारिणी विधी दीदी एवं आशा दीदी द्वारा मंगलाचरण के साथ की गई। कार्यक्रम में मूलनायक भगवंत का पंचामृत अभिषेक किया गया व पपू गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी के मंगल सान्निय में उनके हाथों बालाजीनगर, औरंगाबाद में ब्रह्मचारिणी पुष्पलता पाटणी को जैनेश्वरी दीक्षा दी गई। क्षमाश्री माताजी द्वारा मंत्रोपचार कर विधिवत दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित आर्यिका माताजी को सभी भक्तों की उपस्थिति में श्री आर्यिका हेतुश्री माताजी नाम दिया गया। आर्यिका हेतुश्री माताजी को पवनकुमार पूनमचंद पाटणी, धुले के हाथों पिच्छी व कमंडल दिया गया तो कोपरगांव के पांडे परिवार की लड़कियों की ओर से शास्त्र प्रदान किया गया तो सुवर्णा सरोज पहाड़े, अंकिता दगड़ा, नम्रता काला, प्रेरणा छाबड़ा, स्मिता बोरा के हाथों वस्त्र प्रदान किया गया एवं स्वरूपबाई मूलचंद पाटणीन, धुले की ओर से जाप माला भेंट दी गई। शकुंतला पांडे, वीरगांव की ओर से चटाई तो कार्य में उपस्थित भक्तों को श्रीमती सुशीला पांडे एवं एड.सुशील पांडे की ओर से महाप्रसाद का वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्र के महामंत्री श्री देवेन्द्र काला ने किया। दीक्षा समारोह में महाराष्ट्र के विविध भागों से भक्त उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफलता के लिए विश्वस्त मंडल के लोगों ने परिश्रम किया। इस प्रकार की जानकारी क्षेत्र के प्रचार प्रसार संयोजक नरेन्द्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल ने दिया।

प्रस्तुती - पियूष / नरेन्द्र जैन, औरंगाबाद

मधुबन में मांस-मदिरा की बिक्री पर पाबंदी

मधुबन (गिरिडीह)। जैनियों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल मधुबन में मांस व शराब की बिक्री पर रोक लगाने के लिए प्रशासन ने कमर कस ली है। सोमवार दिनांक 9 फरवरी, 2015 से मधुबन में न तो इसकी बिक्री होगी और न ही कोई जहां-तहां वाहन खड़ा कर सकेगा। अद्यतन स्थिति के लिए पीरटांड थाना प्रभारी खुद सुबह शाम क्षेत्र का निरीक्षण करेंगे।

यह निर्णय रविवार दिनांक 8 फरवरी, 2015 को मधुबन के यात्री निवास में पुलिस अधीक्षक श्री क्रांति कुमार गड़िदेशी की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिया गया। एसपी ने कई समस्याओं का हल भी सुझाया। बैठक में मधुबन की विभिन्न संस्था के प्रतिनिधियों ने समस्याओं को गिनाया। हर समस्या पर विस्तार से चर्चा की गयी। जैन संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने कहा कि पारसनाथ पर्वत २० तीर्थंकरों की पवित्र निर्वाण भूमि है। यहां मांस, मदिरा की खुलेआम बिक्री होना सरासर गलत है। इतना ही नहीं साप्ताहिक हाट में भी जमकर दोनों चीज की बिक्री होती है। एसपी ने पीरटांड थाना प्रभारी को स्वयं हटिया में मांस व मदिरा की बिक्री पर रोक लगाने का निर्देश दिया। कहा कि पोल्ट्री का वाहन बिरनगड्डा तक ही आ सकता है। पहाड़ व मधुबन में बेचने वालों को समझाएं। अगर कोई विक्रेता बात नहीं समझता है तो कड़ा रुख अख्तियार करें। बैठक में मधुबन को अतिक्रमण मुक्त करने पर भी जोर देते हुए अभियान चलाने की बात उठी। इस पर कहा कि उपायुक्त व एसडीओ के साथ बैठक कर रणनीति तय की जायेगी। इस बैठक में प्रशिक्षु आईपीएस श्री अशुमान कुमार, थाना प्रभारी श्री श्रीनिवास प्रसाद, श्री ताराचंद जैन, श्री छीतरमल पाटनी, श्री महावीर प्रसाद, श्री कन्हैयालाल जैन, श्री कमल किशोर पहाड़िया, श्री सुनील अजमेरा आदि उपस्थित थे।

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

खातेगांव में सम्पन्न पंचकल्याणक की झलकियाँ

संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में दिनांक 18 जनवरी से 24 जनवरी, 2015 तक खातेगांव दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अत्यन्त भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें खातेगांव के सर्वश्री सुरेशचन्द काला, कुशल कुमार पठा, जम्बूजी सेठी, नरेन्द्र चौधरी, दिलीप सेठी, नन्दूजी चौधरी, नरेन्द्र मेडिकल आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

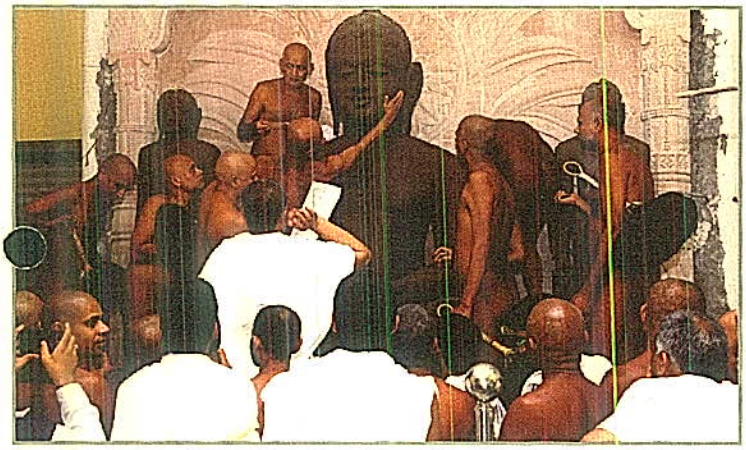

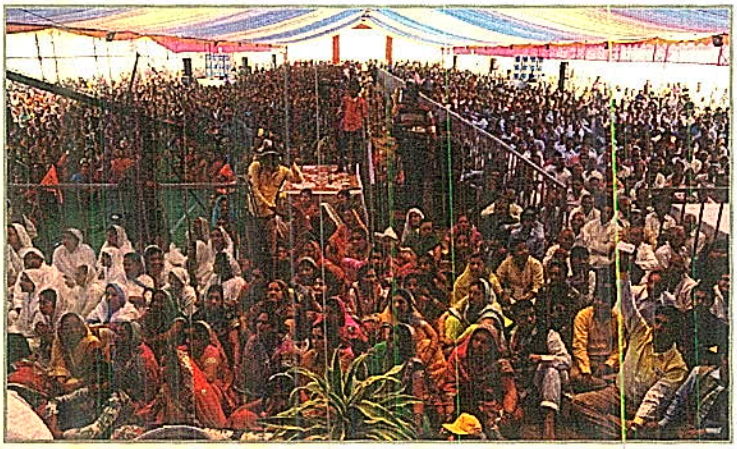

खातेगांव में सम्पन्न पंचकल्याणक की झलकियाँ

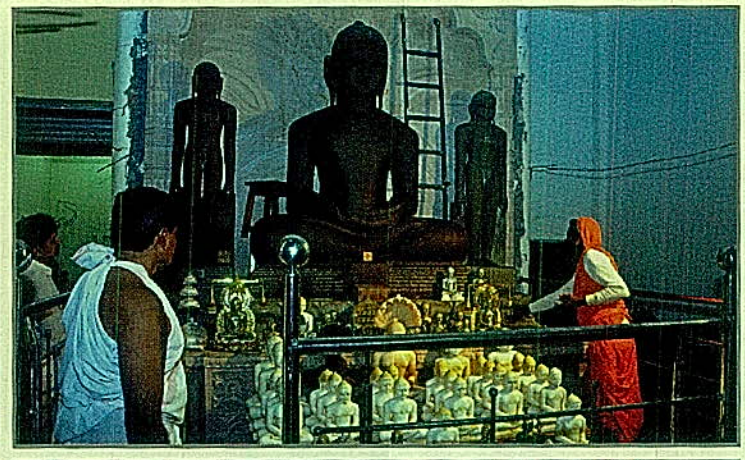

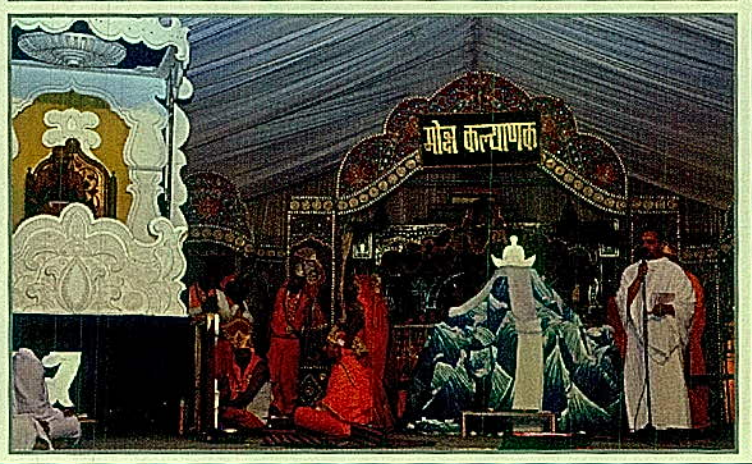

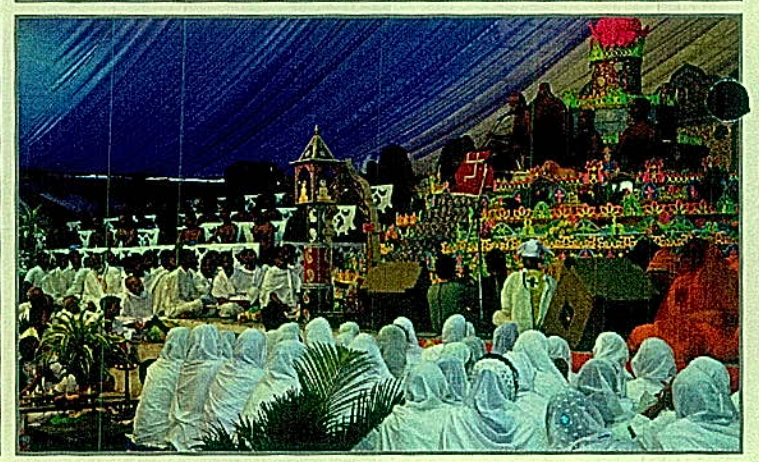

प्रशिक्षित विद्वान, पुजारी, प्रबंधक, कार्यालय सहायक एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर हेतु शीघ्र संपर्क करें

आपको जानकर हर्ष होगा कि श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई द्वारा संचालित 'श्री दिगम्बर जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि' के वर्ष 2014-15 के सत्र का दीक्षांत समारोह दिनांक 29.03.2015 रविवार को होने जा रहा है।

संस्थान के विगत सत्रों में प्रशिक्षित छात्रों को विभिन्न तीर्थों, मंदिरों औद्योगिक प्रतिष्ठानों में नियुक्त किया गया है। जहां पर सभी छात्र दक्षता पूर्वक अपने कार्य का संपादन कर रहे हैं। संस्थान द्वारा छात्रों को एकाउन्ट, कम्प्यूटर, प्रबंधन, पूजन, विधि-विधान, जैन दर्शन, ज्योतिष, मोबाइल एवं कम्प्यूटर रिपेरिंग इत्यादि विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है।

यदि आप अपनी संस्था मंदिर जी अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठान के लिए योग्य कार्यकर्ता चाहते हैं तो अपनी आवश्यकता के अनुरूप छात्रों का चयन यहाँ आकर कर सकते हैं। इसके साथ ही सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के अनुपम गगनचुम्बी जिनालयों के दर्शनों का सौभाग्य भी आपको प्राप्त होगा।

यदि द्रोणगिरि आने की अनुकूलता न हो तो आप अपनी आवश्यकता का पत्र मार्च 2015 तक संस्थान कार्यालय पर भेजें। यहां से योग्य व्यक्ति का चयन कर उसे आपके यहाँ भेज दिया जायेगा।

प्रशिक्षित छात्रों की संख्या सीमित है। कृपया अपनी आवश्यकता का पत्र शीघ्र भेजें।

पता : श्री भागचन्द जैन (पीली दुकान) 'मंत्री'- 9617449494

श्री दिग.जैन तीर्थ प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (लघु सम्मेदशिखर) सेंधपा, जिला- छतरपुर -471311 (म.प्र.)

e-mail: drongirisansthan@gmail.com

मो. प्राचार्य-पं.अरविन्दजी- 0834919855, शिक्षक- पं. देबेश 'बलेह'- 09009672513

DECLARATION

Publication Period	:	Monthly
Publisher/Printer/Editor	:	Umanath Ramajore Dube
Nationality	:	INDIAN
Owner	:	Bharatvarshiya Digamber Jain Tithkshetra Committee Hirabaug, C. P. Tank Mumbai - 400 004

Published for the Proprietor Bharatvarshiya Digamber Jain Tirthkshetra Committeee, Hirabaug, C. P. Tank, Mumbai- 400 004. at Trimurti Printers, 5/7 V P Road, CP Tank Mumbai-400004. by Umanath Dube.

I Declare that, the details whichever I have furnished is true and correct to the best of my knowledge and Belief.

- Umanath Ramajore Dube

Editor

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Mukesh Shantilalji Jain, Guna

Shri Santosh Dhanalal Kasliwal, Vaijapur

Shri Holasrai Manikchand Soni Indore

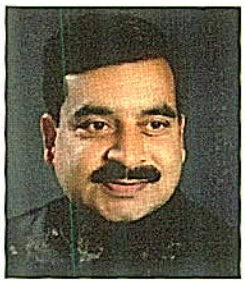
Shri Anil Gyanchandra Jain, Indore

Dr. Kishore Rajendra Kumar Badjatye, Paithan

Dr. Santosh Kumar Fulchandji Gangwal, Vaijapur

Adv. Suhas Hiralal Chudiwal, Shrirampur

Shri Satish Shantilal Godha, Shrirampur

Shri Sumeet Chandrashekhar Thole, Aurangabad

Shri Vikramchand Nemichand Sahuji, Aurangabad

Shri Rahul Kumar Vikramchand Sahuji, Aurangabad

Shri Rameshchand Ambadas Sahuji, Jalna

Shri Jaikumar Poonamchand Bakliwal, Pachod

Shri Raju Uttamchand Kale, Pachod

Shri Rajesh Hukumchandji Badjate, Pachod

Shri Nitin Hukumchandji Badjate, Pachod

Shri Sanjay Ajitchand Sethi, Pachod

Shri Pradeep Kumar Kantilal Kasliwal, Adul

Sou. Manisha Sandeep Kumar Kala, Manwat

Shri Vikas Ramanlal Kasliwal, Aurangabad

Shri Sanjay Kumar Suganchand Kasliwal, Aurangabad

Shri Kishore Dilsukhchand Pande, Aurangabad

Shri Sudhir Chamanlalji Jain, Aurangabad

Smt. Preeti Manoj Kumar Jain (Sahuji), Aurangabad

Shri Manoj Kumar Dulichandsa Sahuji(Jain), Aurangabad

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

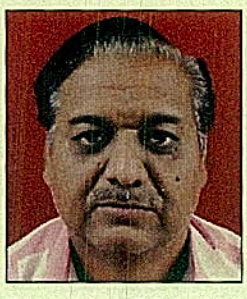
Shri Ashwin kumar Sudhakar Sahuji, Aurangabad

Shri Amol Premraj Sahuji (Jain), Aurangabad

Shri Ravindra Rajmal Pahade, Aurangabad

Smt. Annie Amit Kasliwal, Aurangabad

Shri Pradeep Babulal Pahade, Kannad

Shri Kailash Prakashrao Kamble, Aurangabad

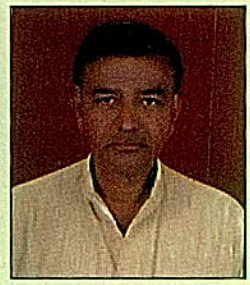
Shri Ramesh Chandulalji Sangwai, Aurangabad

Shri Sandeep Umakant Indane, Pandharpur

Shri Amit Nirmal kumar Kasliwal, Aurangabad

Shri Keshavlal Sohanlal Jain, Ahmedabad

Shri Prakash Ganeshlal Kasliwal, Paithan

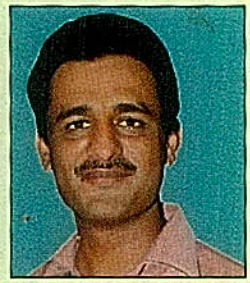
Shri Rahul Vardhmanji Pahade, Paithan

Shri Kapil Kantilalji Pahade, Paithan

Shri Ketan Ajitkumar Thole, Aurangabad

Shri Shantilal Gulabchandji Pahade, Vaijapur

Shri Anil Shantilal Kala, Kasabkheda

Shri Prasanna Vardhman Dongaonkar, Deulgaonraja

Shri Anuj Ashok Jain, Aurangabad

Shri Rajesh Motilal Patney, Aurangabad

Shri Sachin Chhagan Kalamkar, Aurangabad

Shri Shrenik Bahubali Shah, Aurangabad

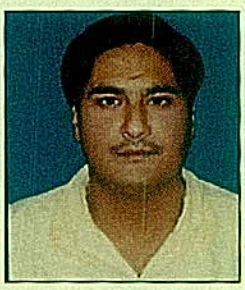
Shri Deepak Rajkumar Thole, Kasabkheda

Shri Gautam Khushalchand Jain, Kasabkheda

Shri Mukesh Dhanpalji Gangwal, Aurangabad

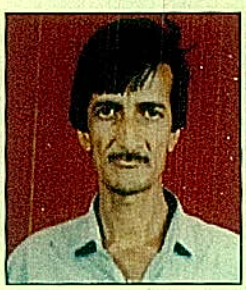
Shri Navinchandra Dhirendra kumar Patni, Aurangabad

जिन लोगों ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त कर ली है, वे मृत्यु को जीतने में भी सफल हो सकते हैं (तिरुवल्लूर)